

वैश्विक बैंकिंग गतिविधियां

वर्ष 2010 और 2011 अब तक वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के लिए एक कठिन काल रहा है क्योंकि वैश्विक वित्तीय प्रणाली तथा विभिन्न देशों में उभरते राजकोषीय और आर्थिक वृद्धि परिदृश्य के कारण चुनौतियां सामने आ रही हैं। सितंबर 2011 की वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट में सावधान किया गया है कि अक्टूबर 2008 से पहली बार वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम बढ़े हैं, जो पिछले तीन वर्षों के दौरान हुई प्रगति में आंशिक विपर्यय के संकेत दे रहे हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग प्रणाली धीमी आर्थिक पुनर्वापसी और देशों की बढ़ती ऋण चिंताओं के कारण अनिश्चय की स्थिति में बनी हुई है जिसके परिणामस्वरूप पुनर्पूजीकरण की आवश्यकता महसूस की जा रही है।। क्यूई2 का सहारा लेने के बावजूद, अमरीका अपनी आर्थिक बहाली की गति खो रहा है और इसकी साख को डाउनग्रेडिंग का सामना करना पड़ा है। अमरीकी बैंकिंग प्रणाली, जिसमें 2010 में ऋण वृद्धि और लाभप्रदता में सुधार के संकेत दिखे थे, अब एक गंभीर प्रश्न का सामना कर रही है कि क्या बैंकिंग प्रणाली की यह पुनर्वापसी निकट भविष्य में जारी रहेगी। यूरोप के कुछ देशों के सार्वजनिक वित्त में गंभीर गिरावट के कारण यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली कुल मिलाकर बढ़ते ऋण, बाजार और निधीयन जोखिम के समक्ष कमजोर होकर खड़ी है। इसके अलावा, इनमें से कई बैंकों को देशों की चूकों के जोखिम से बचने के लिए पुनर्पूजीकरण की आवश्यकता है। ब्रिटेन में भी बैंकिंग प्रणाली उच्च लीवरेज और कमजोर आस्ति गुणवत्ता से ग्रस्त बनी हुई है। प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में ऋण वृद्धि सापेक्षिक रूप से उच्च स्तर पर रही है; इसे बढ़ते मुद्रास्फीतिक दबावों तथा पूंजी अंतर्वाहों को देखते हुए चिंता का एक कारण माना जा रहा है। इसके अलावा, यह भी चिंता व्यक्त की जा रही है कि ऋण वृद्धि आगे आने वाले वर्षों में एक कमजोर आस्ति गुणवत्ता की नींव डाल रही है। अच्छी बात है कि उन्नत और उभरती दोनों अर्थव्यवस्थाओं ने वैयक्तिक और बहुपक्षीय रूप से अपनी बैंकिंग प्रणालियों की समष्टि विवेकपूर्ण निगरानी को मजबूत किया है। जबकि यह महत्वपूर्ण है कि वैश्विक बैंकिंग प्रणाली को अंदर से मजबूत करने के प्रयास किये जाएं लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि राजकोषीय और आर्थिक जोखिमों को रोकने के लिए प्रभावी समाधान निकाले जाएं जो इस समय अंदर से बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता के लिए खतरा बने हुए हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था के व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुए ऐसे सभी समाधान निकाले जाने की आवश्यकता है।

1. परिचय

2.1 वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए वर्ष 2010 आशाओं और चिंताओं की मिश्रित भावनाओं से भरा रहा। वित्तीय संकट के फलस्वरूप 2009 में आर्थिक वृद्धि में एक बड़ी रुकावट के बाद, इस आशा के कारण उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में 'तेज' बहाली को कुछ प्रोत्साहन मिला। ये चिंताएं यूरो क्षेत्र में देशों की साख के बढ़ते जोखिमों तथा मध्य-पूर्व और उत्तर अफ्रीका क्षेत्र में अनिश्चितता के साथ बढ़ते मुद्रास्फीतिक दबावों के कारण थीं। 2011 की शुरुआत में दिखी आशाओं ने सामान्य रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था और विशेष

रूप से 2011 में अमरीकी अर्थव्यवस्था में अनुमानित मंदी के कारण और अधिक चिंताओं को जन्म दिया। इसके अलावा, अमरीका में सरकारी ऋण सीमा में वृद्धि और स्टैंडर्ड एण्ड पुअर की ऋण रेटिंग एजेंसी द्वारा उसकी साख की रेटिंग में डाउनग्रेडिंग के कारण अमरीका में भी साख संबंधी जोखिम और बढ़ गए हैं।

2.2 ऐसे वातावरण में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली का कार्यनिष्पादन भी कुछ सकारात्मक गतिविधियों और कई कमियों की मिश्रित सामग्री से भरा हुआ रहा है। सकारात्मक गतिविधियां देशों के द्वारा संकट से सीखकर विनियामी और पर्यवेक्षी ढांचे में सुधार तथा बैंकों की

पूजी पर्याप्तता बढ़ाने के प्रयास के रूप में रही है। लेकिन, बड़ी कमियां वैश्विक बैंकिंग गतिविधियों की व्यापक पुनर्वापसी के न होने के रूप में रही हैं, ये पुनर्वापसी बेहतर ऋण वृद्धि, लाभप्रदता और आस्ति गुणवत्ता तथा कम लीवरेज के रूप में वर्णित की जा सकती है।

2.3 इस पृष्ठभूमि में, इस अध्याय में चुनिंदा उन्नत तथा उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग गतिविधियों और सुदृढ़ता के प्रमुख संकेतकों का प्रयोग करते हुए वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के कार्यनिष्पादन का विश्लेषण किया गया है। इसमें कुछ उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं/अर्थव्यवस्था-समूहों की बैंकिंग प्रणालियों के वैयक्तिक कार्यनिष्पादन का विस्तृत ब्यौरा भी दिया गया है। अंत में, संस्थागत स्तर पर इसमें व्यापक वैश्विक उपस्थिति वाले 100 शीर्ष बैंकों के कार्यनिष्पादन का विश्लेषण किया गया है। इसके पश्चात, इसमें वर्ष के दौरान वैश्विक बैंकिंग प्रणाली से संबंधित प्रमुख विनियामी और पर्यवेक्षी नीतियों पर प्रकाश डाला गया है।

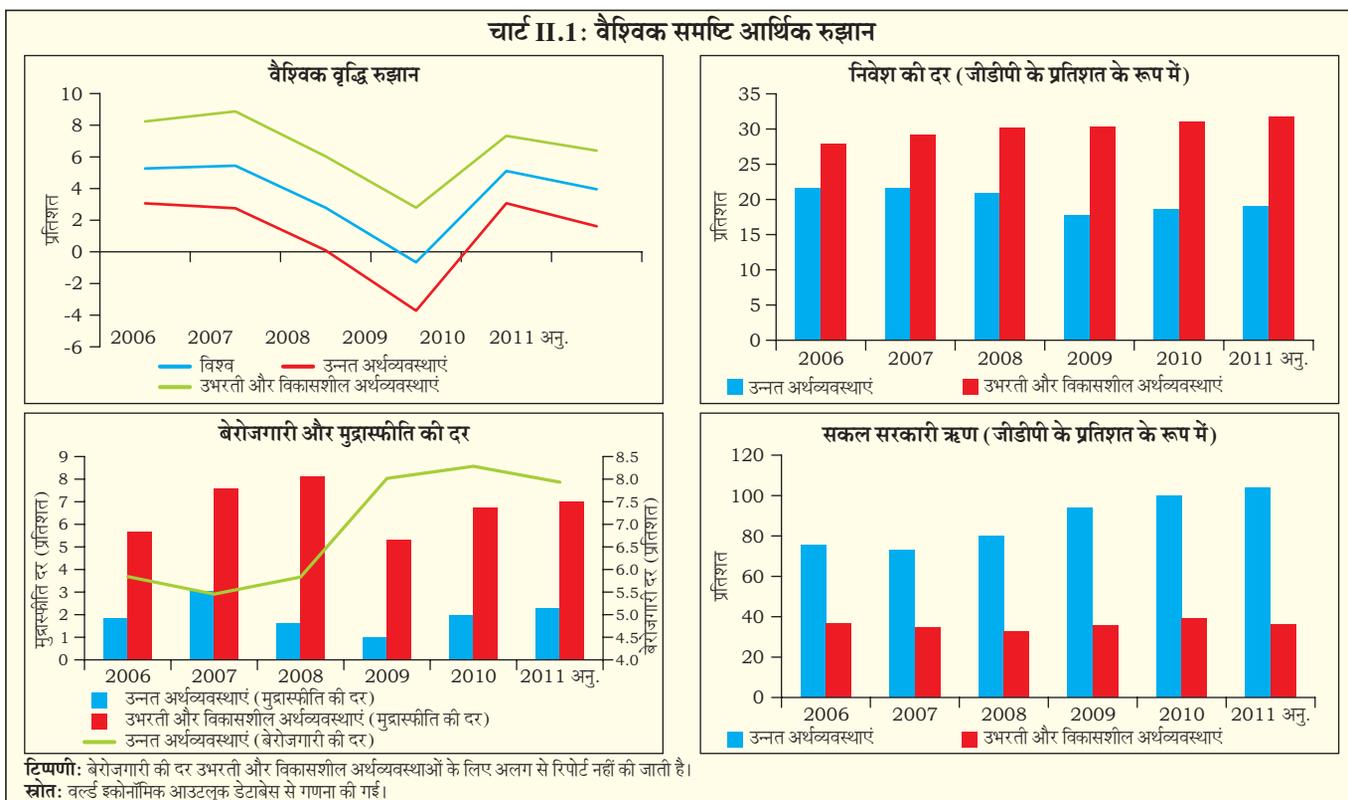
2. वैश्विक बैंकिंग रुझान

2.4 वर्तमान वैश्विक समष्टि आर्थिक स्थिति में उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में असंतुलित आर्थिक रिकवरी, 2011 में आर्थिक संभावनाओं में कमी, बेरोजगारी और मुद्रास्फीतिक दबावों का उच्च स्तर तथा सरकारी ऋण का उच्च स्तर जैसी विशेषताएं मौजूद हैं (चार्ट II.1)।

समष्टि आर्थिक जोखिम काफी अधिक बढ़ गये हैं

2.5 अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने अपने सितंबर 2011 के वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक में 2011 के दौरान कुल मिलाकर विश्व अर्थव्यवस्था के लिए 4.0 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया है जिसमें उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं 6.4 प्रतिशत की दर से तथा उन्नत अर्थव्यवस्थाएं केवल 1.6 प्रतिशत की दर से बढ़ रही हैं। प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की कम त्रैमासिक जीडीपी वृद्धि को देखते हुए, सितंबर 2011 में किया गया 1.6 प्रतिशत का उन्नत अर्थव्यवस्थाओं का आकलन जून 2011 में किये गये 2.2 प्रतिशत के आकलन से कम है। 2010 में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बेरोजगारी की

चार्ट II.1: वैश्विक समष्टि आर्थिक रुझान



दर 8 प्रतिशत से थोड़ा ऊपर रही है अलबत्ता आइएमएफ के आकलनों के अनुसार इसमें 2011 में कुछ कमी आएगी। मुद्रास्फीतिक दबाव जो 2010 में तेल, खाद्य और वस्तुओं के बढ़ते मूल्यों के कारण बहुत अधिक हो गये थे, उभरती अर्थव्यवस्थाओं में इनके 2011 में और भी बढ़ने की आशा है।

ऋण पुनर्वापसी संबंधी अनिश्चितता जारी है

2.6 पूर्व खंड में की गयी चर्चा के अनुसार समष्टि आर्थिक पृष्ठभूमि में कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बैंकिंग कारोबार में 2010 में पुनर्वापसी के चिह्न दिखे। संकट के बाद ऋणात्मक वृद्धि जोन में जाने के पश्चात, 2011 की पहली तिमाही में अमरीका, जर्मनी और फ्रांस में बैंक ऋण की वृद्धि में बढ़ोतरी दिखी। लेकिन, अमरीका और अब जर्मनी¹ में भी आर्थिक पुनर्वापसी की तस्वीर के अस्पष्ट होने के कारण अनिश्चितता बनी हुई है कि क्या यह ऋण पुनर्वापसी जारी रहेगी अथवा नहीं। वास्तव में, अमरीका में 2011 की दूसरी तिमाही में ऋण वृद्धि में फिर गिरावट देखी गई है। 2011 में ब्रिटेन और जापान में बैंक ऋण वृद्धि, जिसमें 2009 की शुरुआत से गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई थी, में बहाली दिखी है, लेकिन यह अभी ऋणात्मक जोन में बनी हुई है। यूरोप की अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं विशेष रूप से राजकोषीय तनावों वाले देशों अर्थात् पुर्तगाल, स्पेन और इटली में बैंक ऋण वृद्धि में सीधी गिरावट देखी गई, यहां पर 2011 तक पुनर्वापसी के कोई चिह्न नहीं नजर आ रहे हैं (चार्ट II.2)।

आस्तियों पर आय में मामूली वृद्धि दिखी

2.7 ऋण वृद्धि में तेजी के अलावा आस्तियों पर आय (आरओए), जो बैंकिंग प्रणाली की लाभप्रदता और सुदृढ़ता का एक संकेतक है, में भी 2010 में अमरीका और फ्रांस में मामूली वृद्धि दिखी (सारणी II.1)। अमरीकी बैंकों की आस्तियों पर आय 2008 और 2009 में ऋणात्मक जोन में रहने के पश्चात धनात्मक हो गई; इसमें 2011 (मार्च) में और वृद्धि दिखी। रूस, चीन और मलेशिया की

सारणी II.1: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों की आस्तियों पर आय

देश	2007	2008	2009	2010	2011*
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं					
फ्रांस	0.4	0.0	0.4	0.6	...
जर्मनी	0.3	-0.1	0.2
ग्रीस	1.0	0.2	-0.1	-0.6	-0.3
इटली	0.7	0.3	0.2
जापान	0.3	-0.3	0.2	0.4	...
पुर्तगाल	1.2	0.4	0.4	0.5	0.5
स्पेन	1.1	0.8	0.6	0.5	...
ब्रिटेन	0.4	-0.4	0.1	0.2	...
यूनाइटेड स्टेट	1.2	-0.1	-0.1	0.9	1.2
उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं					
रूस	3.0	1.8	0.7	1.9	2.3
चीन	0.9	1.0	0.9	1.0	...
भारत	0.9	1.0	1.1	1.1	...
मलेशिया	1.5	1.5	1.2	1.5	1.8
ब्राजील	3.4	1.5	2.4	3.2	3.3
मैक्सिको	2.3	1.4	1.5	1.8	1.6

स्रोत: आइएमएफ के वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक से संकलित।

... उपलब्ध नहीं।

* मार्च को समाप्त अवधि तक।

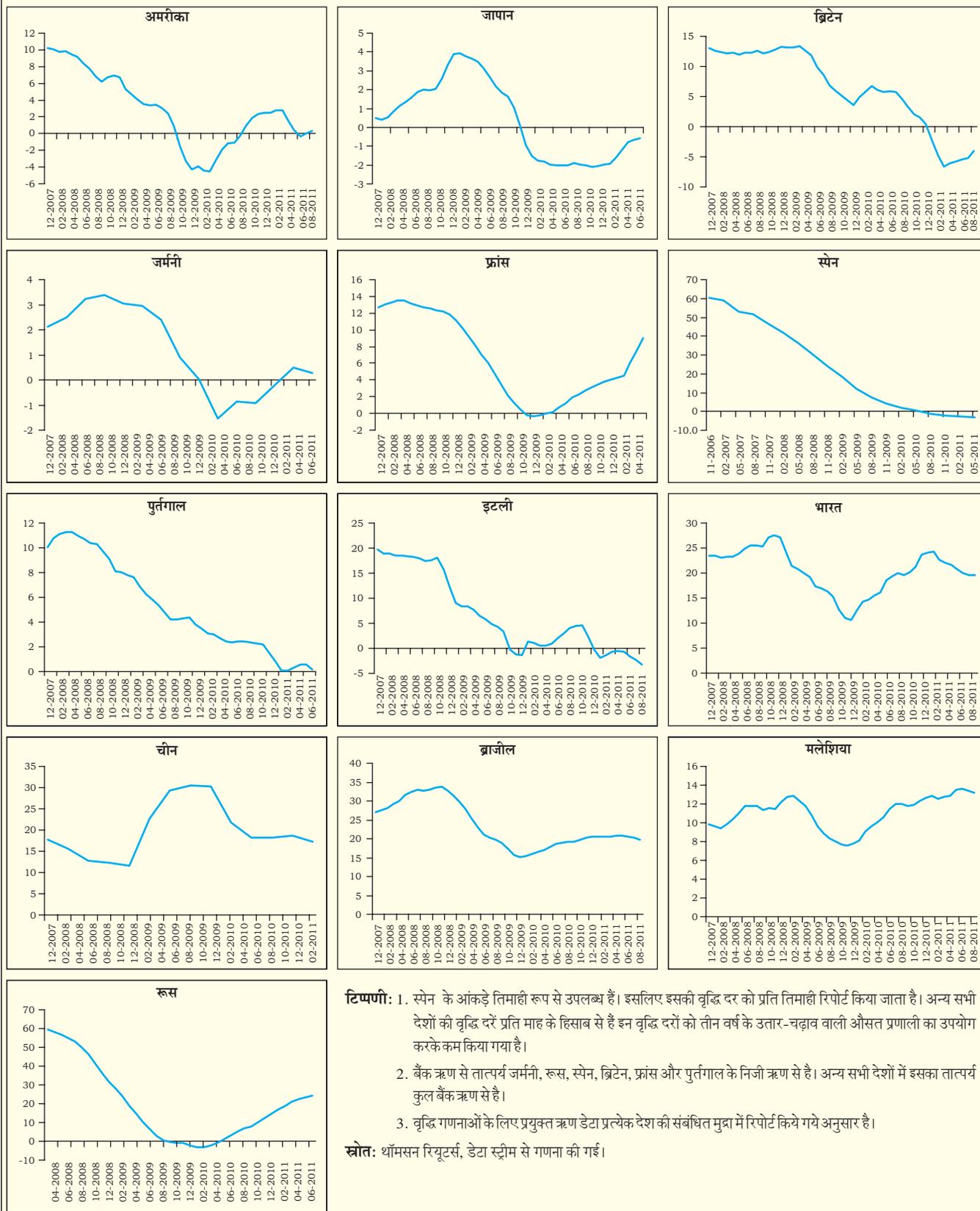
बैंकिंग प्रणाली की आस्तियों पर आय 2009 और 2010 के बीच बढ़ी जबकि 2008 और 2009 के बीच इन आस्तियों की आय में कमी आई थी। रूस और मलेशिया में आस्तियों पर आय में वृद्धि की प्रवृत्ति 2011(मार्च) में भी जारी रही। भारतीय बैंकों की आस्तियों पर आय में भी 2008 और 2010 के बीच मामूली वृद्धि दिखी।

बैंक शेयरों का निराशाजनक कार्यानिष्ठादन

2.8 बैंक शेयर सूचकांकों के परिवर्तन में वैश्विक तौर पर 2009 की शुरुआत से धीमे-धीमे बहाली हो रही है, ये परिवर्तन सामान्य रूप से बैंकों के तुलनपत्र और लाभप्रदता वृद्धि के परिवर्तनों से संबद्ध होते हैं। अमरीका में बैंक शेयरों के मूल्यों में ऊपर की ओर चढ़ाव दिखा लेकिन यह एक संकुचित दायरे में रहा जो इन शेयरों में निवेशकों के कमजोर आत्मविश्वास को दर्शाता है (चार्ट II.3)। 2011 की शुरुआत से अमरीका के बैंक शेयरों में एक असाधारण गिरावट हुई। इसी तरह की गिरावट राजकोषीय रूप से तनावग्रस्त अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों के शेयरों में भी देखी जा सकती है। कुल मिलाकर उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं और चीन में 2009 की शुरुआत से बैंक

¹ 2011 की पहली तिमाही में अमरीकी जीडीपी में वृद्धि घटकर 0.4 प्रतिशत हो गई और इसके बाद इसमें सुधार आया अलबत्ता थोड़ा-सा जिससे यह दूसरी तिमाही में बढ़कर 1.3 प्रतिशत हो गई। जर्मनी में 2011 की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि 1.3 प्रतिशत थी लेकिन वर्ष की दूसरी तिमाही में घटकर 0.1 प्रतिशत हो गई।

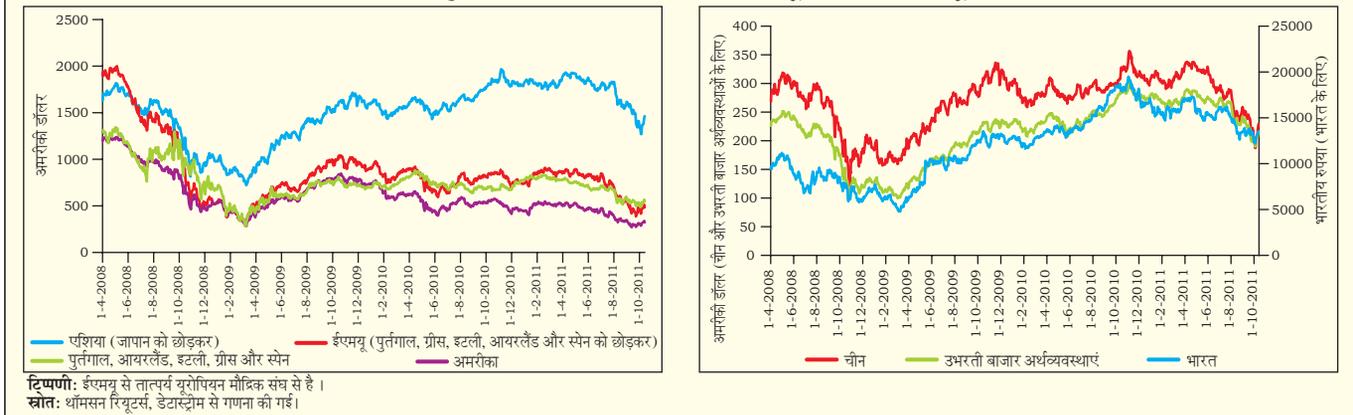
चार्ट II.2: बैंक ऋण वृद्धि का तीन वर्ष का घटता-बढ़ता औसत, प्रतिशत में



टिप्पणी: 1. स्पेन के आंकड़े तिमाही रूप से उपलब्ध हैं। इसलिए इसकी वृद्धि दर को प्रति तिमाही रिपोर्ट किया जाता है। अन्य सभी देशों की वृद्धि दरें प्रति माह के हिसाब से हैं इन वृद्धि दरों को तीन वर्ष के उतार-चढ़ाव वाली औसत प्रणाली का उपयोग करके कम किया गया है।
 2. बैंक ऋण से तात्पर्य जर्मनी, रूस, स्पेन, ब्रिटेन, फ्रांस और पुर्तगाल के निजी ऋण से है। अन्य सभी देशों में इसका तात्पर्य कुल बैंक ऋण से है।
 3. वृद्धि गणनाओं के लिए प्रयुक्त ऋण डेटा प्रत्येक देश की संबंधित मुद्रा में रिपोर्ट किये गये अनुसार है।

स्रोत: थॉमसन रियटर्स, डेटा स्ट्रीम से गणना की गई।

चार्ट II.3: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं/अर्थव्यवस्था समूहों में बैंक शेयर सूचकांक



शेयरों के सूचकांकों में ऊपर की ओर बहुत धीमी वृद्धि हुई। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में से, भारत में 2009 की शुरुआत से बैंकों के शेयरों में ऊपर की ओर चढ़ाव काफी अधिक रहा जिसके फलस्वरूप इसका सूचकांक 2010 के अंत तक ऊपर की ओर चढ़कर संकट पूर्व के चिह्न तक पहुंच गया।

अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग कारोबार की पुनर्वापसी

2.9 2010-11 (मार्च) में अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग कारोबार की काफी अधिक पुनर्वापसी हुई (रिपोर्टिंग बैंक के स्थान के अनुसार), यह रुझान 2009-10 में भी जारी रहा। 2008-09 के दौरान बैंकों की अंतरराष्ट्रीय आस्तियां और देयताएं वित्तीय संकट के पश्चात काफी अधिक संकुचित हो गईं (सारणी II.2)।

सारणी II.2: बैंकों की अंतरराष्ट्रीय आस्तियों और देयताओं में वृद्धि

मद	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
कुल आस्तियां	26.1	-17.5	0.2	5.4
1. बाह्य आस्तियां	26.6	-17.5	0.1	5.3
कर्ज और जमा राशियां	28.2	-19.0	-1.0	6.7
प्रतिभूतियों और अन्य आस्तियों की धारिताएं	22.1	-13.2	3.0	1.9
2. विदेशी मुद्रा में स्थानीय आस्तियां	22.4	-17.5	0.7	5.7
कुल देयताएं	26.5	-18.0	-0.7	7.1
1. बाह्य देयताएं	27.4	-18.6	0.2	6.6
कर्ज और जमा राशियां	26.5	-21.2	-1.3	6.0
प्रतिभूतियों के अपने निर्गम और अन्य देयताएं	33.7	-2.0	7.4	9.5
2. विदेशी मुद्रा में स्थानीय देयताएं	20.8	-14.4	-6.1	10.5

स्रोत: बीआइएस, लोकेशनल बैंकिंग स्टेटिस्टिक्स से गणना की गई।

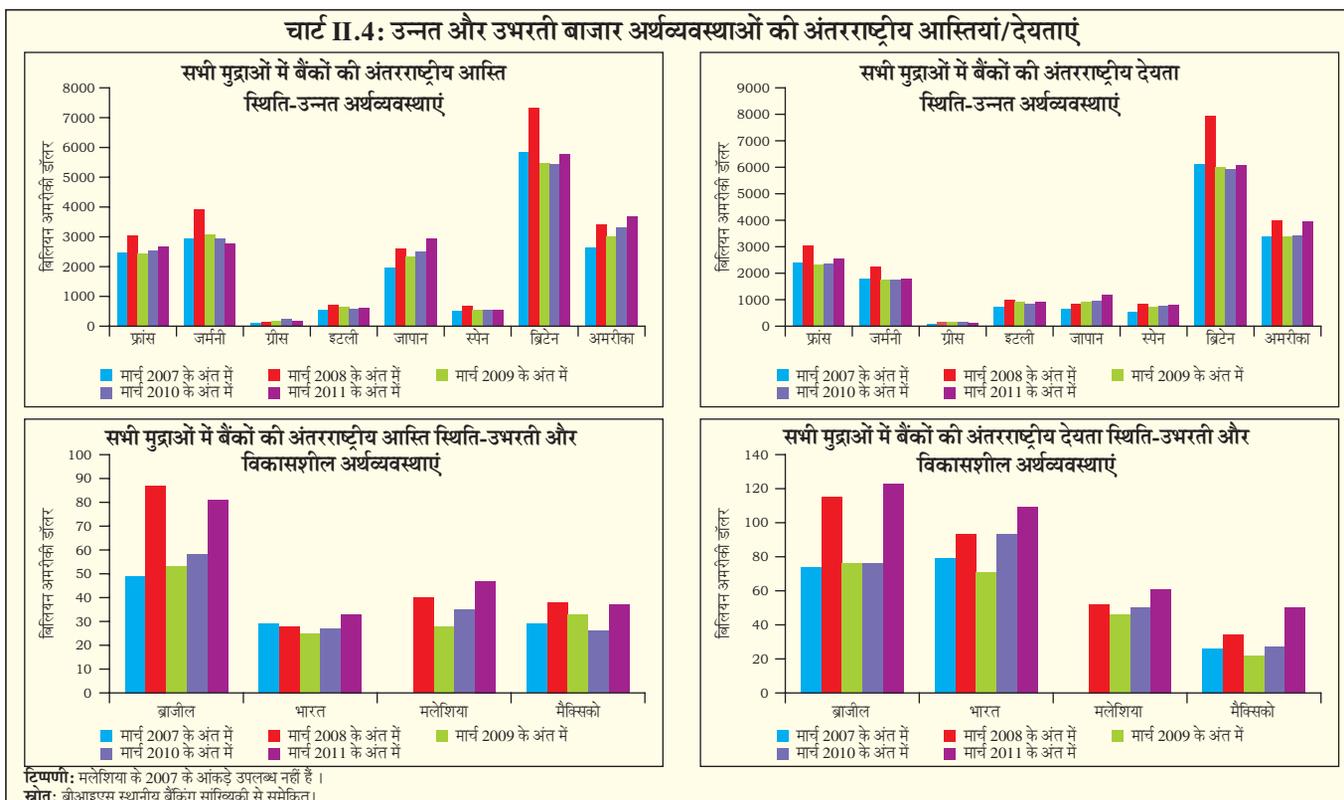
2.10 अधिकांश उन्नत देशों में अंतरराष्ट्रीय आस्तियों और देयताओं (सभी क्षेत्रों की सभी मुद्राओं में) के परिमाण में मार्च 2010 के अंत और मार्च 2011 के अंत के बीच वृद्धि का इसी प्रकार का रुझान दिखा (चार्ट II.4)। उन्नत देशों में से, अमरीका और ब्रिटेन में स्थित बैंकों की अंतरराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि सबसे असाधारण रही। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भी, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग कारोबार में 2011 की पहली तिमाही तक काफी अधिक गति आ गयी। लैटिन अमरीका के बैंकों ने प्रतिभूतियों के निर्गम का बड़े पैमाने पर सहारा लिया जिससे इन बैंकों की अंतरराष्ट्रीय देयताओं में तीव्र वृद्धि हुई।

बैंकों की वित्तीय सुदृढ़ता

1. पूंजी पर्याप्तता के स्तर में वृद्धि

2.11 अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों की पूंजी पर्याप्तता का स्तर 2008 और 2010 के बीच धीमी गति से बढ़ा (सारणी II.3)। 2010 तक ब्रिटेन, अमरीका, जापान और जर्मनी में जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) 15 प्रतिशत के ऊपर रखा गया। 2011 की पहली तिमाही में अमरीका और जर्मनी के बैंकों के इस अनुपात में और वृद्धि दिखी। लेकिन, प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी पर्याप्तता का स्तर 2009 और 2010 के बीच मामूली रूप से गिरा, चीन, भारत और मैक्सिको इसके अपवाद रहे। मैक्सिको और चीन दोनों के बैंकों में मार्च 2011 तक उनकी पूंजी में मामूली गिरावट हुई।

चार्ट II.4: उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की अंतरराष्ट्रीय आस्तियां/देयताएं



सारणी II.3: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों का जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात

देश	2007	2008	2009	2010	2011*
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं					
फ्रांस	10.2	10.5	12.4	12.3	...
जर्मनी	12.9	13.6	14.8	16.1	16.6
ग्रीस	11.2	9.4	11.7	11.4	12.3
इटली	10.4	10.8	12.1	12.3	...
जापान	12.3	12.4	15.8	16.7	...
पुर्तगाल	10.4	9.4	10.5	10.2	10.5
स्पेन	11.4	11.3	12.2	11.8	...
ब्रिटेन	12.6	12.9	14.8	15.9	...
अमरीका	12.8	12.8	14.3	15.3	15.5
उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं					
ब्राजील	18.7	18.2	18.9	17.6	18.2
चीन	8.4	12.0	11.4	12.2	11.8
भारत	12.3	13.0	13.2	13.6	...
मलेशिया	14.4	15.5	18.2	17.5	16.4
मैक्सिको	15.9	15.3	16.5	16.9	16.5
रूस	15.5	16.8	20.9	18.1	17.2

स्रोत: आइएमएफ के वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक से संकलित।

... उपलब्ध नहीं।

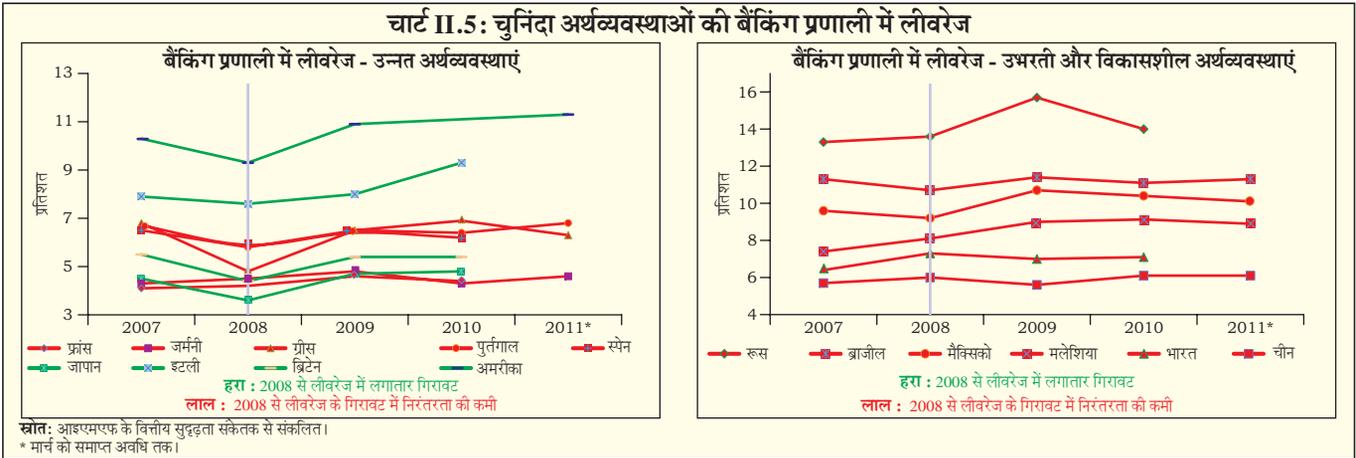
* मार्च को समाप्त अवधि तक।

2. लीवरेज में असमान गिरावट

2.12 संकट के पश्चात भिन्न-भिन्न देशों के बीच बैंकिंग क्षेत्र के लीवरेज में असमान गिरावट आई; यहां पर कुल आस्तियों की तुलना में कुल पूंजी (और आरक्षित निधियां) के अनुपात को बैंकिंग प्रणाली² में लीवरेज के एक संकेतक के रूप में लिया गया है। अमरीका में 2008 और 2010 के बीच बैंकिंग प्रणाली के लीवरेज में कुछ कमी दिखी (चार्ट II.5)। अमरीकी बैंकों का यह रुझान 2011 की पहली तिमाही में आगे जारी रहा। 2008 और 2010 के बीच ब्रिटेन के बैंकों के लीवरेज में भी कुछ कमी देखी जा सकती है। इस कमी के बावजूद भी ब्रिटेन के बैंकों के लीवरेज की मात्रा सापेक्षिक रूप से उच्च स्तर पर बनी रही। 2008 को संदर्भ बिंदु मानते हुए अन्य उन्नत यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं अर्थात् फ्रांस, जर्मनी, पुर्तगाल, ग्रीस और स्पेन की बैंकिंग प्रणाली की डिलीवरेजिंग में कोई अधिक गति नहीं आई।

² बासेल III के नियम पाठ के अंतर्गत बीसीबीएस द्वारा प्रस्तुत लीवरेज अनुपात के आधार प्रस्ताव के अनुसार, (i) पूंजी मापन में टियर I पूंजी और टियर I पूंजी के प्रभावी रूप को शामिल किया जाना चाहिए, जबकि (ii) कुल एक्सपोजर में सभी प्रावधानों और अन्य मूल्यन समायोजनों को घटाकर निकले एक्सपोजर को शामिल किया जाना चाहिए। इसलिए वर्तमान विश्लेषण में प्रयुक्त लीवरेज के मापन को प्रारंभिक के रूप में उल्लिखित किया गया है। यह अपने वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक (एफएसआइ) डेटाबेस में आइएमएफ द्वारा प्रदान किये गये मापन का सीधी तौर पर अनुगमन करता है। यह उल्लेखनीय है कि आइएमएफ इस मापन की चर्चा करते समय इसे “लीवरेज अनुपात” के रूप में उल्लेख करता है: देखें एफएसआइ की “संकल्पना और परिभाषा”, <www.imf.org>।

चार्ट II.5: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणाली में लीवरेज



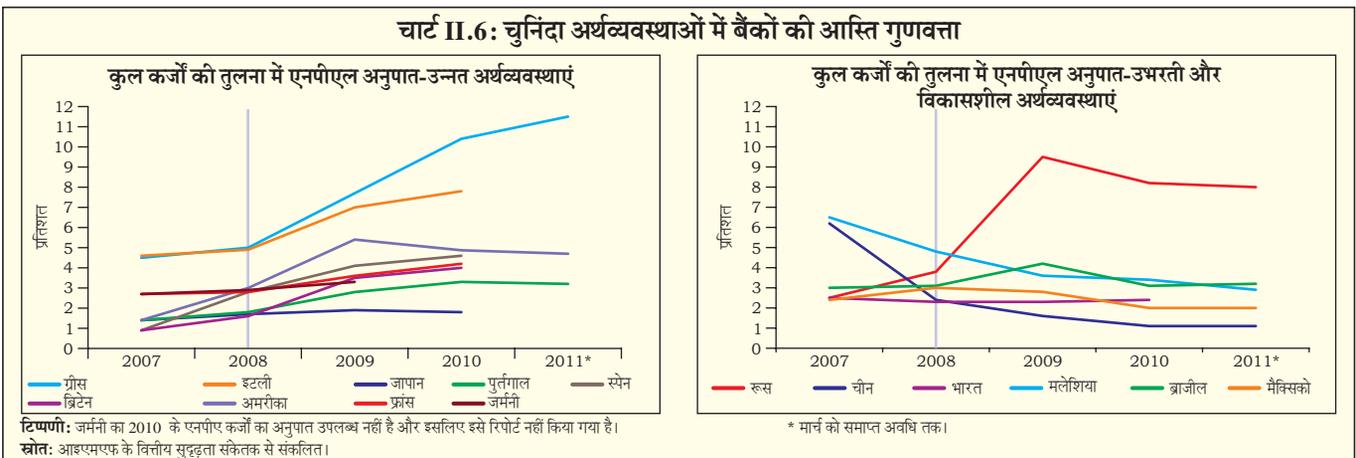
2.13 प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग प्रणालियां सामान्य रूप से अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कम लीवरेज्ड रहीं। लेकिन, संकट की अवधि के दौरान इन अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणालियों के लीवरेज में कोई गोचर वृद्धि के चिह्न नहीं दिखे। 2008 को संदर्भ बिंदु मानने पर, संकट की अवधि के पश्चात कई उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणालियों के लीवरेज में वृद्धि हुई। वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (सितंबर 2011) में उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणालियों में रिलीवरेजिंग को एक प्रमुख चिंता के रूप में दिखाया गया है।

3. कमजोर होती आस्ति गुणवत्ता

2.14 वैश्विक रूप से, वित्तीय संकट के प्रारंभ से बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में थोड़ा सुधार हुआ। वैश्विक वित्तीय स्थिरता

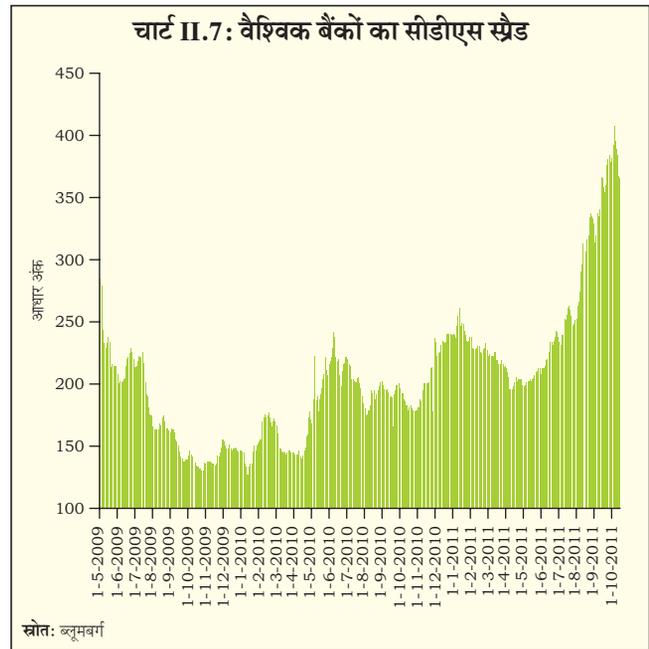
रिपोर्ट (सितंबर 2011) के अनुसार ऋण जोखिम बढ़े हैं और वे वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए प्रमुख संभावित जोखिम बने हुए हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि ऋण जोखिम की वृद्धि ने वास्तविक अर्थव्यवस्था के सुधारों को पीछे छोड़ दिया। अमरीका को छोड़कर 2008 और 2010 के बीच अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में अनर्जक कर्ज (एनपीएल) अनुपात की बढ़ती प्रवृत्ति बनी रही। अमरीका में 2009 और 2010 के बीच आस्ति गुणवत्ता में मामूली सुधार हुआ जो 2011 की पहली तिमाही में जारी रहा (चार्ट II.6)। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बिल्कुल विपरीत, कई प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में संकट के बाद के वर्षों में आस्ति गुणवत्ता में काफी अधिक सुधार दिखा। चीन में आस्ति गुणवत्ता विशेष रूप से सुदृढ़ बनी रही।

चार्ट II.6: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों की आस्ति गुणवत्ता



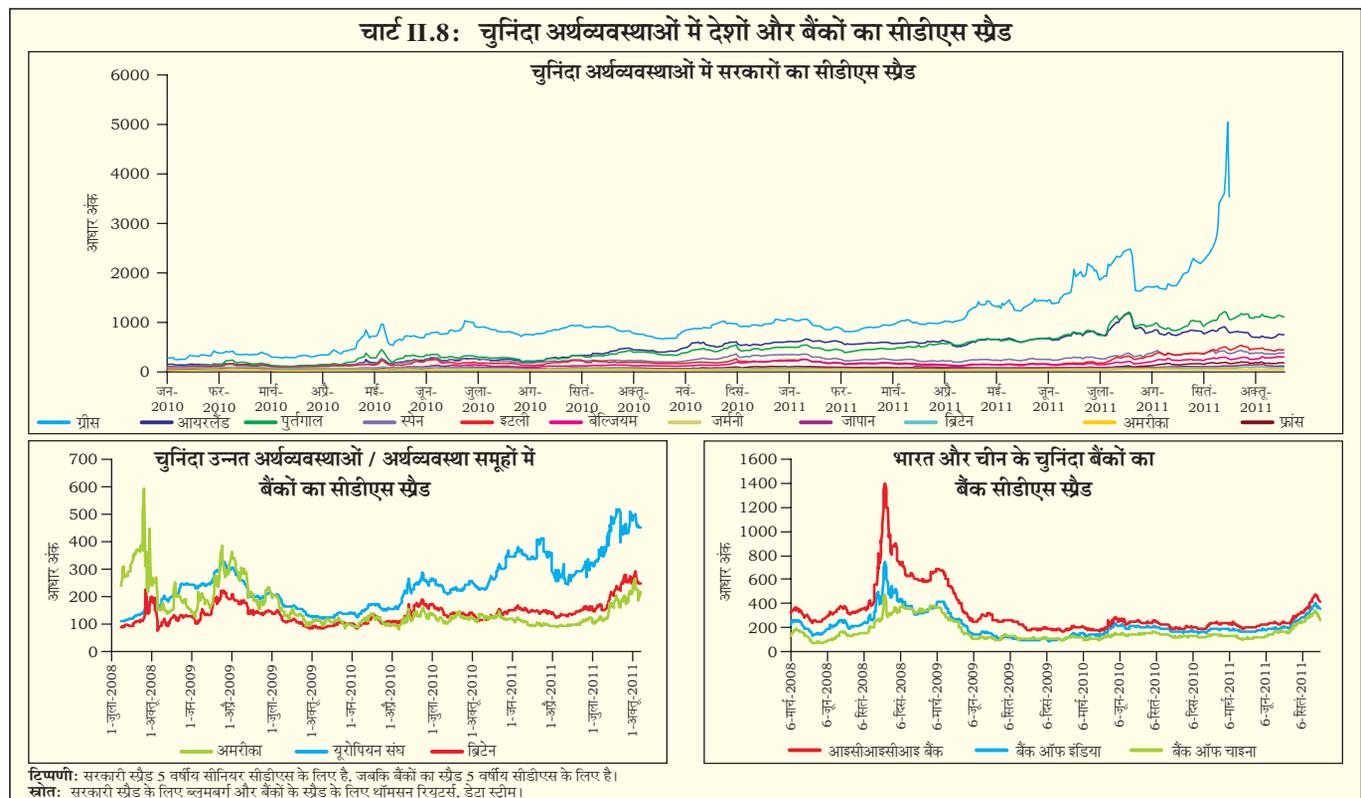
बढ़ते सीडीएस स्प्रेड जोखिम बोध के बढ़ने का संकेत दे रहे हैं

2.15 2010-11 के दौरान वैश्विक बैंकों के सीडीएस स्प्रेड में सामान्य रूप से वृद्धि हुई साथ ही इसमें गिरावट सविराम अवधियों में हुई (चार्ट II.7)। 2011 के दौरान सीडीएस स्प्रेड में मध्य अप्रैल तक गिरावट हुई और इसके बाद इसमें वृद्धि हुई। कुछ देशों विशेष रूप से यूरो जोन के कुछ देशों की आर्थिक हैसियत पर हाल के महीनों में गंभीर प्रश्न चिह्न खड़े होने से, वैश्विक बैंकों का सीडीएस स्प्रेड बढ़ रहा है साथ ही सरकारी ऋण से जुड़े जोखिम भी बढ़ रहे हैं (चार्ट II.7)। ग्रीस के मामले में सोवरेन सीडीएस स्प्रेड 15 सितंबर 2011 तक बहुत तेजी से बढ़ा है जो सरकारी ऋण जोखिमों की बढ़ती गंभीरता को परिलक्षित करता है (चार्ट II.8)।



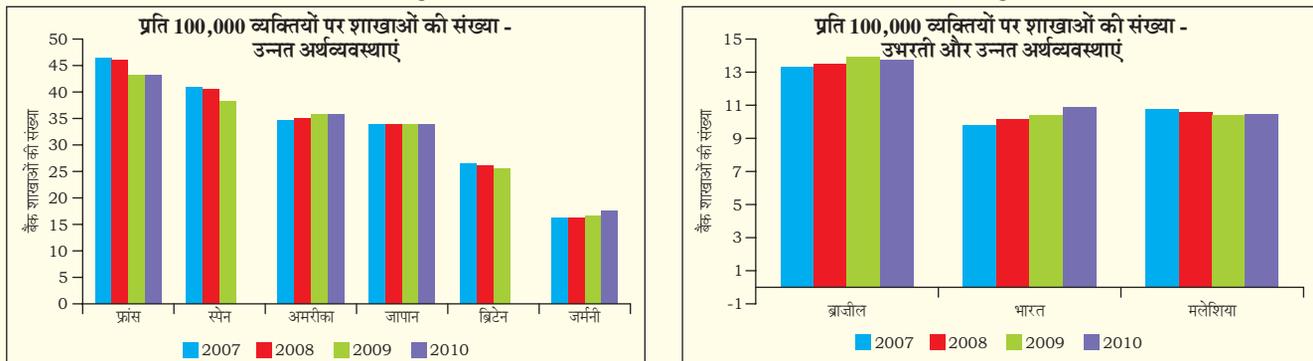
2.16 सितंबर 2008 के दौरान विभिन्न देशों में बैंकों का सीडीएस स्प्रेड काफी अधिक बढ़ गया था (चार्ट II.8)। स्प्रेड में अगले महीने कुछ कमी आई और यूरो क्षेत्र को छोड़कर अधिकांश उन्नत और

आर्थिक अर्थव्यवस्थाओं में यह 2010 और 2011 की पहली छमाही में कम बना रहा। न केवल यूरो क्षेत्र में बल्कि विश्व के अन्य भागों में भी बैंकों का सीडीएस स्प्रेड 2011 की तीसरी तिमाही में बढ़ रहा है।



टिप्पणी: सरकारी स्प्रेड 5 वार्षिक सोनियर सीडीएस के लिए है, जबकि बैंकों का स्प्रेड 5 वार्षिक सीडीएस के लिए है।
स्रोत: सरकारी स्प्रेड के लिए ब्लूमबर्ग और बैंकों के स्प्रेड के लिए थॉमसन रिप्यूटर्स, डेटा स्ट्रीम।

चार्ट II.9: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग सेवाओं तक जनसंख्यिकीय पहुंच



टिप्पणी: ब्रिटेन और स्पेन के 2010 के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं और इसलिए उन्हें चार्ट में रिपोर्ट नहीं किया गया है।
 स्रोत: फाइनेंशियल एक्सेस सर्वे, आईएमएफ से संश्लेषित।

बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच और उपयोग की प्रवृत्ति

संकट के फलस्वरूप वित्तीय वंचना में वृद्धि की संभावना

2.17 हाल के वर्षों में वित्तीय समावेशन उन्नत और उभरती दोनों अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो गया है। विशेष रूप से वित्तीय संकट के पश्चात इसे प्रमुख स्थान प्राप्त हो गया है। ऐसा इस कारण है क्योंकि संकट के पश्चात विशेष रूप से उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय वंचना में वृद्धि की संभावना की चिंताएं पैदा हो गई हैं। बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच और उपयोग पर विश्व बैंक से प्राप्त हाल के आंकड़े बताते हैं कि ये चिंताएं गलत नहीं हैं। बैंक शाखाओं के बंद होने के परिणामस्वरूप संकट से प्रभावित कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच में कमी आई है (चार्ट II.9)। विश्व बैंक की "फाइनेंशियल एक्सेस" रिपोर्ट में उल्लेख के

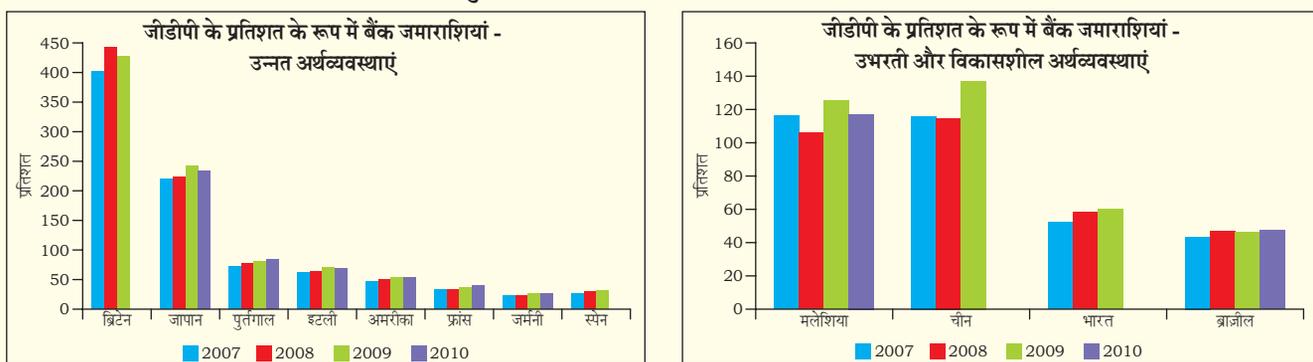
अनुसार आर्थिक वृद्धि के घटने का कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में खुदरा इन्फ्रास्ट्रक्चर पर प्रभाव पड़ा और बैंकों की शाखाएं इस प्रभाव की एक शिकार बनीं। बैंक सेवाओं के उपयोग में भी कमी आई। बैंकिंग सेवाओं के उपयोग में गिरावट सबसे अधिक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में रही। यह गिरावट जमा सेवाओं की तुलना में ऋण सेवाओं के उपयोग में ज्यादा मुखर और व्यापक थी (चार्ट II.10 और II.11)।

3. चुनिंदा क्षेत्रों और देशों में बैंकिंग प्रवृत्तियां

अमरीकी बैंकिंग प्रणाली - कमजोर बहाली के चिह्न

2.18 2010 में अमरीकी बैंकिंग प्रणाली के कार्यनिष्पादन में वित्तीय संकट के समय से बहाली के चिह्न दिखे, लेकिन ऐतिहासिक

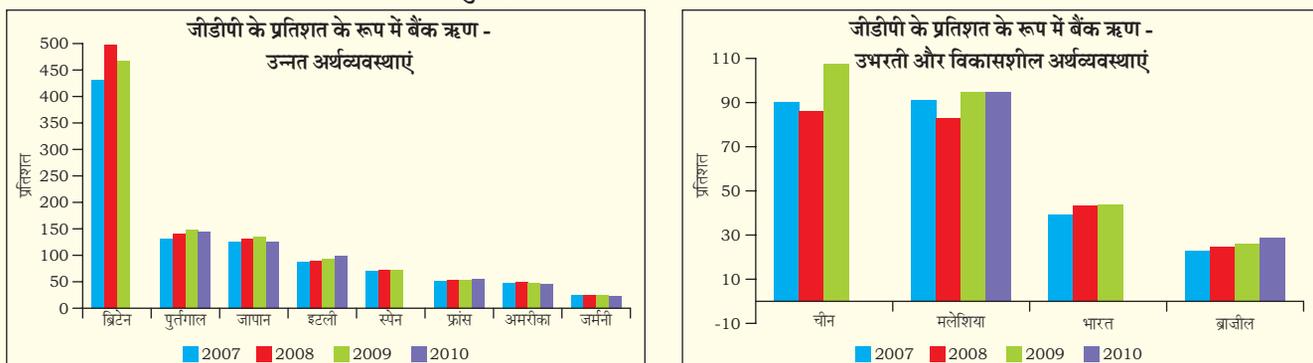
चार्ट II.10: विभिन्न चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग सेवाओं का उपयोग - जमाराशियां



टिप्पणी: ब्रिटेन, स्पेन, भारत और चीन के 2010 के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं और इसलिए उन्हें चार्ट में रिपोर्ट नहीं किया गया है।
 स्रोत: फाइनेंशियल एक्सेस सर्वे, आईएमएफ से संश्लेषित।

³ फाइनेंशियल एक्सेस 2010 - दि स्टेट ऑफ फाइनेंशियल इन्क्लूशन थ्रू दि क्राइसेज; सीजीएपी, विश्व बैंक।

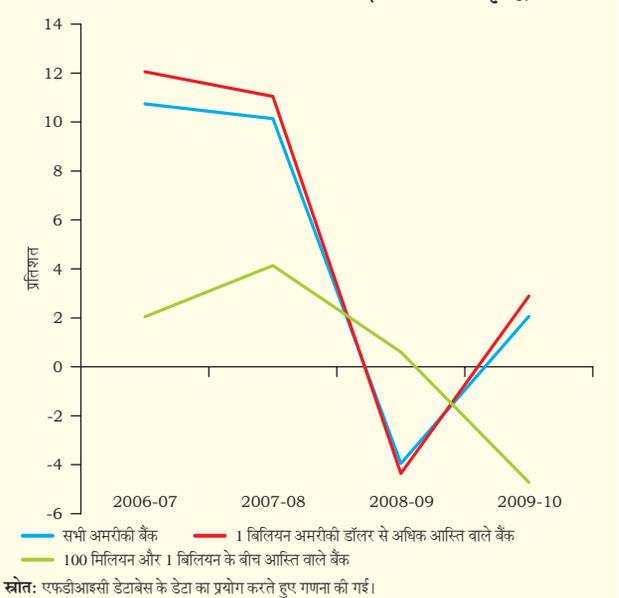
चार्ट II.11: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग सेवाओं का उपयोग - ऋण



टिप्पणी: ब्रिटेन, स्पेन, भारत और चीन के 2010 के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं और इसलिए उन्हें चार्ट में रिपोर्ट नहीं किया गया है।
स्रोत: फाइनेंशियल एक्ससेस सर्वे, आईएमएफ से समेकित।

मानकों के अनुसार यह बहाली कमजोर बनी रही। अमरीकी बैंकिंग क्षेत्र की आस्तियों में 2008-09 के 3.9 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि से 2009-10 में 2.1 प्रतिशत की समग्र वृद्धि हुई। यह बहाली व्यापक रूप से 1 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक के आस्ति आकार वाले अमरीकी बैंकों के कारण हुई जिसमें कुल आस्तियों का लगभग 90 प्रतिशत अमरीकी बैंकिंग क्षेत्र का था (चार्ट II.12)।

चार्ट II.12: अमरीकी बैंकिंग क्षेत्र में आस्ति वृद्धि



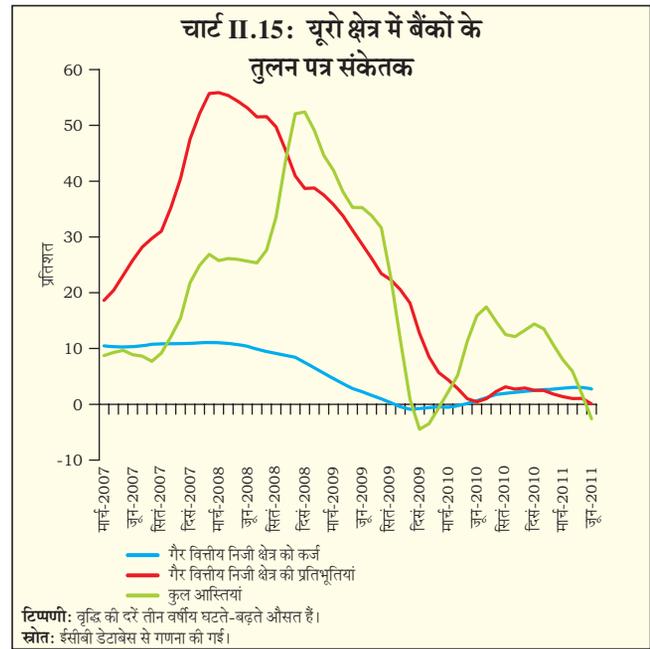
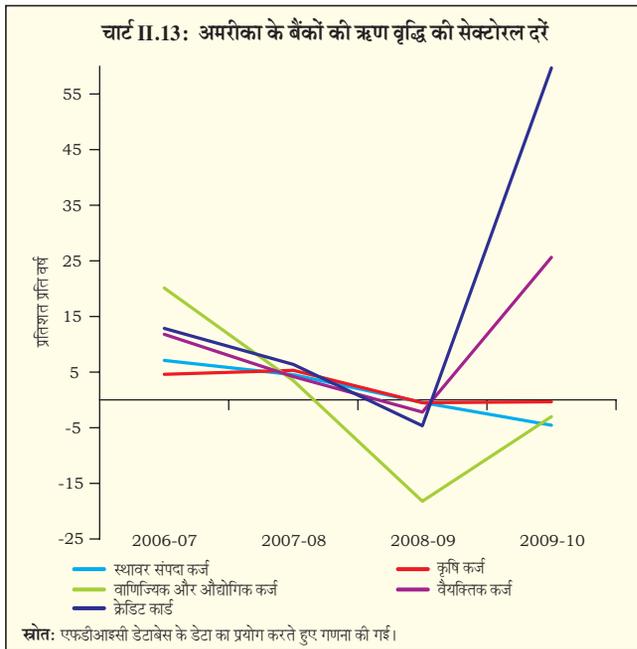
ऋण औद्योगिक क्षेत्र तक सीमित बना रहा

2.19 अमरीकी बैंकों के तुलन पत्र के प्रमुख घटकों में से एक ऋण था जिसको संकट के कारण सबसे अधिक आघात लगा। जैसाकि पूर्व खंड में पहले ही उल्लेख किया गया है, अमरीकी बैंकों के ऋण में वृद्धि सितंबर 2009 से ऋणात्मक हो गई और अगस्त 2010 में एक वर्ष पश्चात धनात्मक जोन में पहुंच गयी लेकिन 2011 में इसमें पुनः कमी के चिह्न दिखने लगे (देखें पूर्व का चार्ट II.2)। वह क्षेत्र, जिसे संकट के फलस्वरूप हुई ऋण और आर्थिक दोनों की वृद्धि में गिरावट के कारण सबसे अधिक आघात लगा, अमरीका का वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्र था। वाणिज्यिक/औद्योगिक और स्थावर संपदा दोनों क्षेत्रों के लिए बैंक ऋण 2009-10 में भी प्रतिबंधित बने रहे क्योंकि वैयक्तिक ऋण विशेष रूप से क्रेडिट कार्ड में, निम्न आधार और बेहतर आर्थिक दृष्टिकोण के बारे में अमरीकी उपभोक्ताओं के विश्वास में कुछ सुधार के कारण, काफी अधिक पुनर्वापसी दिखी (चार्ट II.13)।

अनर्जक कर्जों का उच्च स्तर

2.20 अनर्जक कर्जों का उच्च स्तर, विशेष रूप से स्थावर संपदा क्षेत्र में, अमरीकी बैंकिंग प्रणाली में सबसे कमजोर स्थल बना रहा, जैसाकि फेडरल रिजर्व की वार्षिक रिपोर्ट (2010) में कहा गया। स्थावर संपदा कर्जों की चूक दर 2010 की दूसरी तिमाही में 10 प्रतिशत से ऊपर थी (चार्ट II.14)⁴। बाद की तिमाहियों में यह दर मामूली रूप से कम हुई लेकिन अभी भी काफी ऊंचाई पर बनी हुई है।

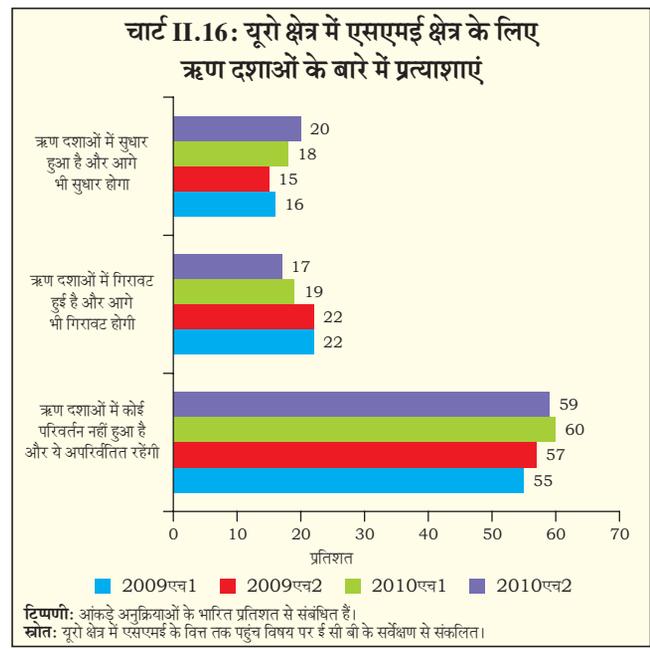
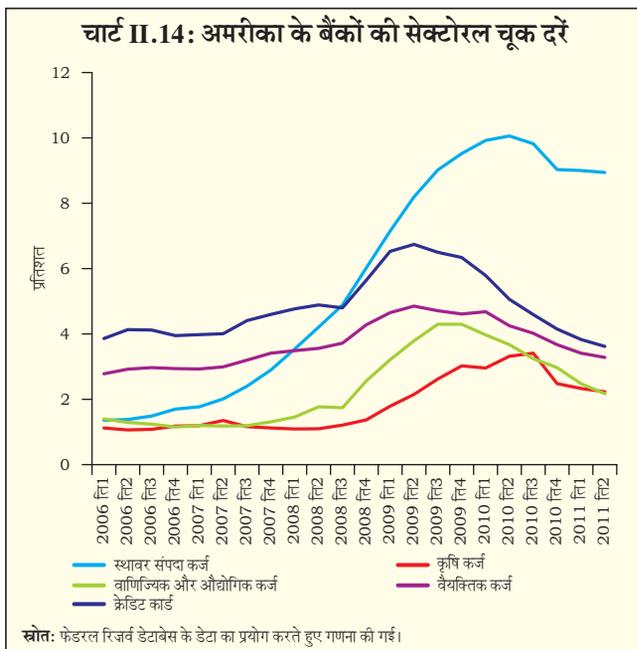
⁴ चूक दर को 30 दिन अथवा अधिक तक देय कर्ज तथा अभी भी उपचित हो रहे ब्याज और गैर उपचित स्थिति वाले ब्याज के रूप में परिभाषित किया गया है। इसे मौसमी तौर पर समायोजित किया जाता है। इसलिए इन दरों की तुलना पूर्व में दिये गये चार्ट II.6 के एनपीएल अनुपात से नहीं की गई है।



यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली : ऋण की पुनर्वापसी संबंधी चिंताएं बनी हुई हैं

2.21 कुल स्तर पर, यूरो क्षेत्र की बैंकिंग दशाओं में सुधार के चिह्न दिखे, ये चिह्न 2010 में निजी ऋण तथा निजी क्षेत्र की प्रतिभूतियों में बैंकों के निवेश में वृद्धि की पुनर्वापसी के रूप में दिखे (चार्ट II.15)। लेकिन, अलग-अलग स्तर पर, ऋण पुनर्वापसी की

चिंताओं ने राजकोषीय तौर पर संकटग्रस्त अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों को त्रस्त करना जारी रखा। यूरो क्षेत्र में लघु और मझौले उद्यमों (एसएमई) के लिए ऋण की पुनर्वापसी संबंधी चिंताएं बनी रहीं, यह क्षेत्र बड़े पैमाने पर बैंक वित्त पर निर्भर है (चार्ट II.16)।

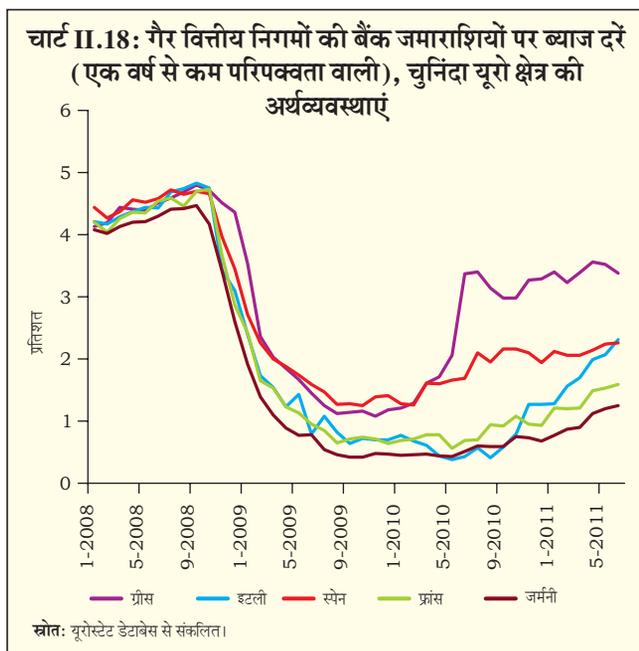
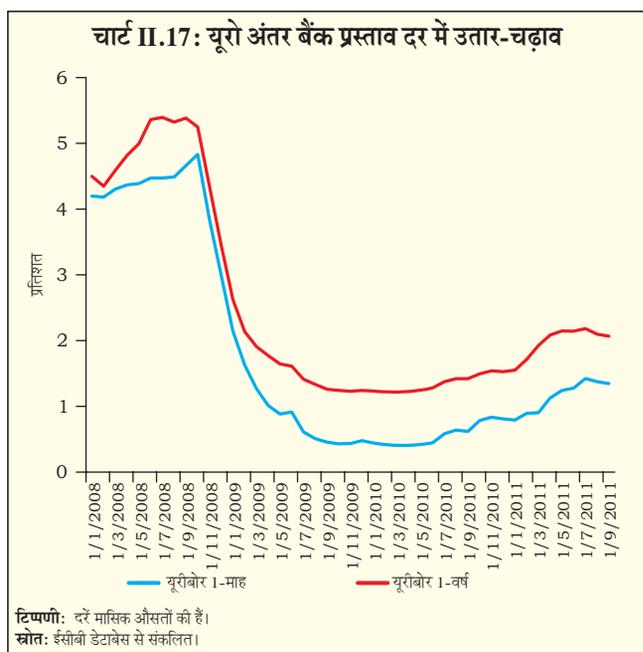


यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली पर सरकारी ऋण संकट का प्रभाव

2.22 सरकारी ऋण विशेष रूप से देश के सरकारी ऋण, सामान्यतयः बैंकों के तुलन पत्र का एक महत्वपूर्ण भाग होते हैं। सरकारी ऋण की साख गिरने और परिणामस्वरूप हानि होने से यूरो क्षेत्र के देशों के बैंकों के तुलनपत्र, विशेष रूप से राजकोषीय तौर पर पंगु देशों में, काफी अधिक कमजोर हो गये हैं। इसके अलावा, देश के साख संबंधी बढ़ते जोखिमों ने भी यूरो क्षेत्र के बैंकों के लिए निधीयन जोखिम को बढ़ाया है। यह 2010 के मध्य से यूरोबोर (यूरो अंतर बैंक प्रस्तावित दर) में बढ़ रहे रुझान से स्पष्ट है (चार्ट II.17)। यह उल्लेखनीय है कि सरकारी ऋण संकट से बुरी तरह प्रभावित स्पेन, इटली और ग्रीस की जमा दरें, जो यूरो क्षेत्र के अन्य देशों अर्थात फ्रांस और जर्मनी में प्रचलित दरों की तुलना में अधिक थीं, इन अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों के लिए निधीयन संबंधी तनाव पुनः दर्शा रही हैं (चार्ट II.18)।

सरकारी ऋण के विभिन्न देशों के बीच एक्सपोजर से संबंधित जोखिम

2.23 यूरो क्षेत्र में सरकारी ऋण संबंधी चिंताओं के सामने आने से, यूरो क्षेत्र के देशों के सरकारी ऋण के प्रति एक्सपोजर वाले बैंकों की स्थिरता पर चिंताएं खड़ी हो गई हैं, विशेष रूप से सरकारी ऋण के विभिन्न देशों के बीच एक्सपोजर के कारण (बॉक्स II.1)।



ब्रिटेन की बैंकिंग प्रणाली : लीवरेज और ऋण जोखिम उच्च स्तर पर हैं

2.24 2010-11 में ब्रिटेन की बैंकिंग प्रणाली में मामूली डिलीवरेजिंग दिखी और थोक निधीयन पर इसकी निर्भरता घटी, परन्तु यूरो क्षेत्र में इसके सहभागियों की स्थिति विपरीत रही। इसके बाद भी, ब्रिटेन की बैंकिंग प्रणाली कुछ चिंताओं से निरंतर घिरी रही; एक, डिलीवरेजिंग के बावजूद, ब्रिटेन के बैंकों के लिए लीवरेज का स्तर अभी भी अधिक बना हुआ है। दूसरा, निजी ऋण वृद्धि काफी अधिक कमजोर बनी हुई है जैसा कि पहले ही चार्ट पैनल II.2 में दर्शाया गया है। बैंक ऑफ इंग्लैंड के ऋण स्थिति सर्वेक्षण के अनुसार ऋण उपलब्धता में सुधार संबंधी निकट मध्यमकालिक प्रत्याशाएं क्षीण हो रही हुई हैं, विशेष रूप से मध्यमकालिक उद्यमों के लिए (चार्ट II.19)। तीन, ऋण जोखिम अभी भी ऊंचे स्तर पर बने हुए हैं, जैसाकि पूर्व में चार्ट II.6 में वर्णित किया गया है। सेक्टरल स्तर पर, बैंक ऋण के बेजमानती घटक अर्थात क्रेडिट कार्ड कर्ज के लिए ऋण जोखिम बढ़े हैं (चार्ट II.20)।

चीनी बैंकिंग प्रणाली -आस्ति गुणवत्ता के कमजोर होने संबंधी चिंताएं

2.25 उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से, चीन ने 2009 में अपनी बैंकिंग प्रणाली के आस्ति आकार में तीव्र विस्तार किया, यह वह समय

बॉक्स II.1: यूरोप के बैंकों का यूरो क्षेत्र के सरकारी ऋण के प्रति एक्सपोजर

उनके अपने देश के सरकारी ऋण के प्रति एक्सपोजर के अलावा, यूरो क्षेत्र के कुछ राष्ट्रों के बैंकों का विभिन्न देशों के सरकारी ऋण के प्रति एक्सपोजर भी बहुत अधिक है (सारणी नीचे)। उदाहरण के तौर पर, जर्मनी की सुदृढ़ राजकोषीय स्थिति के बावजूद यूरो क्षेत्र के अन्य देशों, जिनके सामने ऋण धारणीयता की समस्याएँ हैं, के सरकारी ऋणों के प्रति इसका एक्सपोजर सापेक्षिक रूप से अधिक है। जर्मनी और फ्रांस

के बैंक अन्य देशों की तुलना में इटली के सरकारी ऋण के प्रति सापेक्षिक रूप से अधिक एक्सपोजेड हैं। बैंकों के सरकारी ऋण के विभिन्न देशों में अधिक एक्सपोजर के कारण, यदि कोई हेयरकट / पुनर्गठन किया जाता है तो यह उन देशों के बैंकों को बुरी तरह से प्रभावित कर सकता है जिनकी अन्यथा राजकोषीय स्थिति सुदृढ़ है।

सारणी: बैंकों का सरकारी ऋण के प्रति एक्सपोजर

(यूरो मिलियन में)

	सरकारी ऋण के प्रति एक्सपोजर				
	ग्रीस	आयरलैंड	पुर्तगाल	इटली	स्पेन
ग्रीस	56,148	-	-	-	-
आयरलैंड	-	5,322	257	-	-
पुर्तगाल	1,739	839	13,707	1,179	345
इटली	1,778	239	304	1,44,856	1,383
स्पेन	1,016	-	6,807	6,017	2,03,310
फ्रांस	11,624	2,476	4,864	48,185	6,592
जर्मनी	18,718	12,922	10,888	72,717	31,854
ब्रिटेन	4,131	5,580	2,571	10,029	5,916
नीदरलैंड	3,160	559	2,272	10,313	1,685

टिप्पणी: यूरो क्षेत्र के चुनिन्दा देशों की सूची में प्रमुख स्रोतों और सरकारी ऋणों के स्थान को कवर किया गया है और यह व्यापक नहीं है।

स्रोत: ब्लंडेल विगनाल, ए. और पी. स्लोविक (2010) ‘‘दि ईयू स्ट्रेस टैस्ट एंड सोवरेन डेट एक्सपोजर्स’’ ओईसीडी वर्किंग पेपर्स ऑन फाइनेंस, इंश्योरेंस एंड प्राइवेट पेंशंस, सं.4।

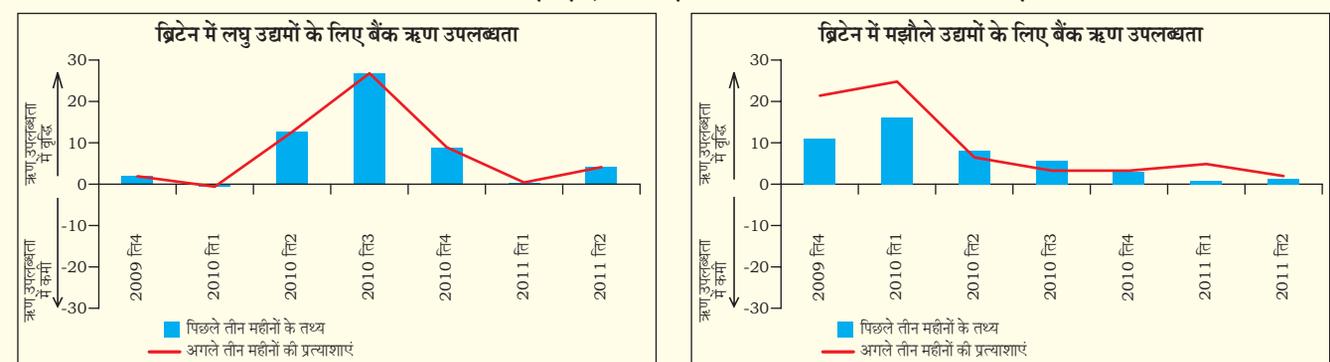
था जब संकट के पश्चात अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग क्षेत्र की आस्तियां संकुचन अवस्था में थीं। बैंक की आस्तियों और ऋण में वृद्धि 2009 के अंत में चरम स्थिति पर पहुंच गयी तथा इसके पश्चात इसमें गिरावट आई (चार्ट II.21)। फिर भी, चीन में ऋण वृद्धि 2010 में उच्च स्तर पर बनी रही। ऋण में तीव्र वृद्धि से निकट भविष्य में चीन के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता के कमजोर होने संबंधी चिंताएं व्यक्त की जा रही हैं।

4. विश्व के 100 शीर्ष बैंकों के कार्यानिष्पादन का विश्लेषण

आस्ति के अनुसार शीर्ष के बैंकों में उल्लेखनीय बदलाव

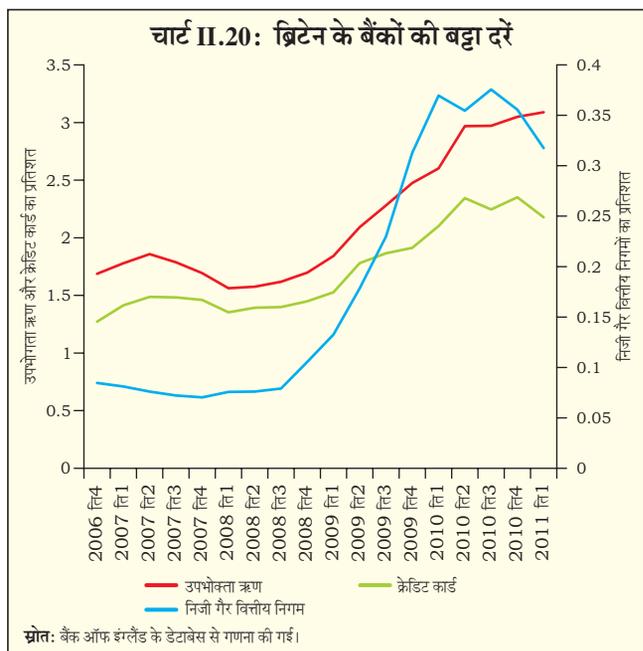
2.26 2009 और 2010 के बीच शीर्ष के 20 वैश्विक बैंकों का रैंक कोरिलेशन कोइफीशियंट 0.83 था। कोरिलेशन कोइफीशियंट में लगातार वृद्धि हुई क्योंकि बैंकों के सैपल को बढ़ाकर 50 शीर्ष बैंक और फिर 100 शीर्ष बैंक तक किया गया। सैपल आकार में वृद्धि के साथ

चार्ट II.19: ब्रिटेन में एसएमई के लिए बैंक ऋण उपलब्धता संबंधी प्रत्याशाएं



टिप्पणी: ये आंकड़े निवल प्रतिशत शेष हैं जिनकी गणना उन उधारकर्ताओं की प्रतिक्रियाओं पर विचार करके की गई है, जिन्होंने अपने बाजार शेयरों के हिसाब से प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।

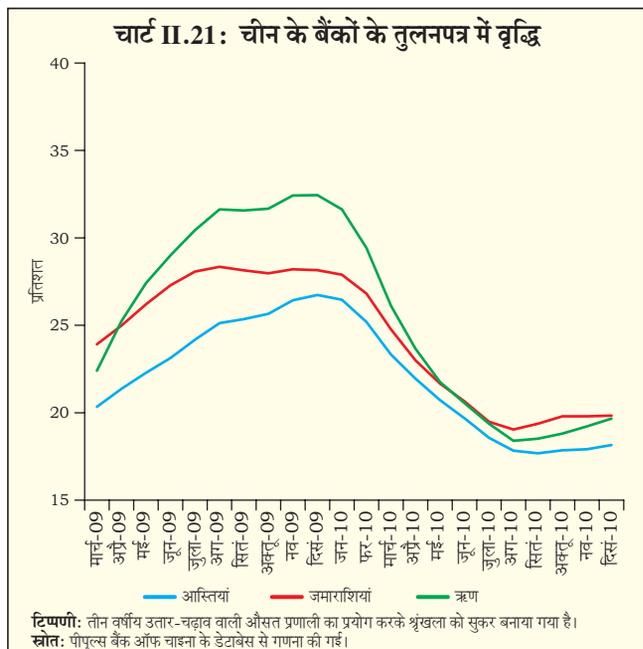
स्रोत: बैंक ऑफ इंग्लैंड, क्रेडिट कंडीशंस सर्वे।



रैंक कोरिलेशन कोइफीशियंट में वृद्धि से पता चलता है कि आस्ति के अनुसार शीर्ष के बैंकों में उल्लेखनीय बदलाव हुआ है (सारणी II.4)।

वैश्विक बैंकिंग कारोबार का उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मामूली स्थानांतरण

2.27 विश्व के 100 शीर्ष बैंकों (उनकी टियर I पूंजी की क्षमता के अनुसार स्थान दिया गया) के निगमीकरण के स्थान के विश्लेषण से



सारणी II.4: 2009 और 2010 के बीच विश्व के शीर्ष बैंकों का रैंक कोरिलेशन कोइफीशियंट

मद	20 शीर्ष बैंक	50 शीर्ष बैंक	100 शीर्ष बैंक
रैंक कोरिलेशन कोइफीशियंट	0.83	0.96	0.98

दिएषणी: कोइफीशियंट यह मानकर निकाला गया है कि दो वर्षों के बीच शीर्ष बैंकों के नमूने समान थे। दूसरे शब्दों में, रैंकिंग इस अवधि के दौरान की नई वृद्धियों/समापनों को हटाकर निकाली गई है।
स्रोत: बैंकर डेटाबेस से गणना की गई।

पता चलता है कि संकट के पश्चात वैश्विक बैंकिंग कारोबार का उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मामूली स्थानांतरण हुआ है। इस स्थानांतरण के लिए बैंक डूबने और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों के आस्ति आकार में कमजोर वृद्धि को उत्तरदायी माना जा सकता है। विश्व के 100 शीर्ष बैंकों की संख्या और कुल आस्ति के अर्थ में, 2009 और 2010 के बीच उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के हिस्से में गिरावट आई (चार्ट II.22)। 2009 और 2010 के बीच उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की आस्तियों के हिस्से में गिरावट अमरीका, ब्रिटेन और प्रमुख रूप से यूरो क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं तक सीमित रही (चार्ट II.23)।

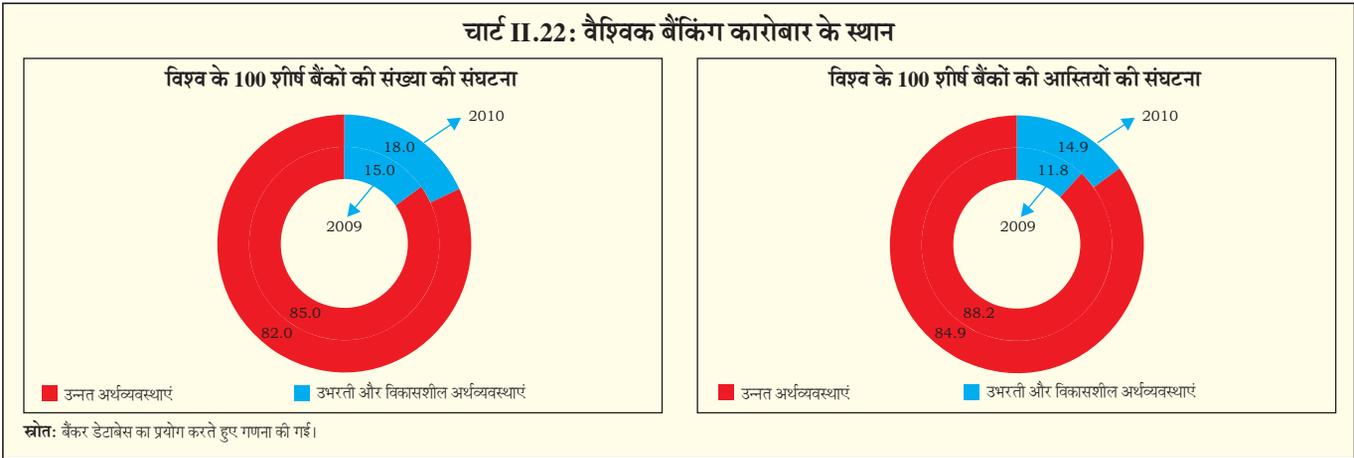
वैश्विक बैंकों की लाभप्रदता में सुधार

2.28 2008 और 2009 के बीच वैश्विक बैंकों की लाभप्रदता में सुनिश्चित सुधार हुआ जैसाकि आस्तियों पर आय (आरओए) में वृद्धि से स्पष्ट है। हानि उठाने वाले वैश्विक बैंकों का प्रतिशत (आस्तियों पर आय ऋणात्मक रिपोर्ट करने वाले) 2009 के 25 प्रतिशत से घटकर 2010 में केवल 5 प्रतिशत रह गया। इसके अलावा, 2010 में लगभग 89 प्रतिशत वैश्विक बैंकों का धनात्मक आरओए 2 प्रतिशत से कम रहा जबकि 2009 में यह हिस्सा 70 प्रतिशत था (चार्ट II.24)।

वैश्विक बैंकों की पूंजी पर्याप्तता को मजबूत करना

2.29 वैश्विक बैंकों के लाभ में सुधार के अलावा, 2009 और 2010 के बीच इन संस्थाओं की पूंजी पर्याप्तता स्थिति को भी मजबूत किया गया। 2009 और 2010 के बीच बैंकों का बढ़ता संकेद्रण सीआरएआर पर आधारित उच्चतर आकार वाली श्रेणियों में रहा। दिसंबर 2010 के अंत में, विश्व के 100 शीर्ष बैंकों के 47 प्रतिशत का

चार्ट II.22: वैश्विक बैंकिंग कारोबार के स्थान



सीआरएआर 13 प्रतिशत और 17 प्रतिशत के बीच दायरे में रहा जो बासेल II ढांचे के अंतर्गत 8 प्रतिशत के बीसीबीएस मानदंड के काफी ऊपर था (चार्ट II.25)।

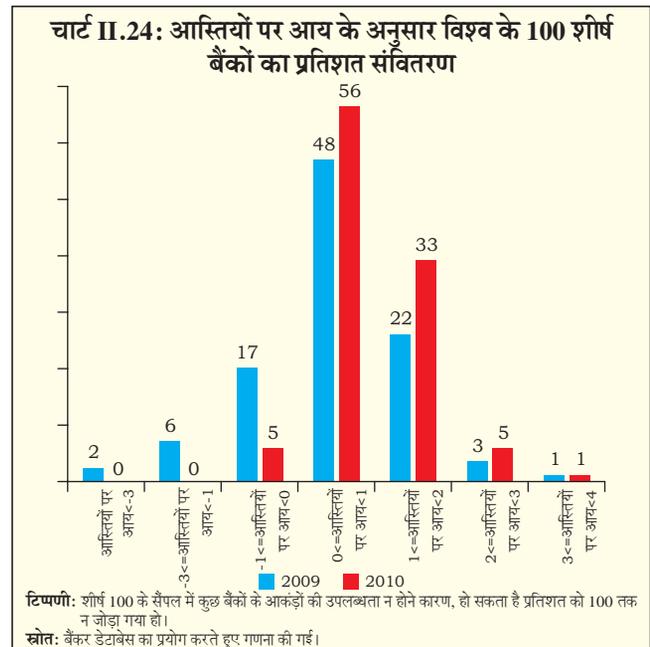
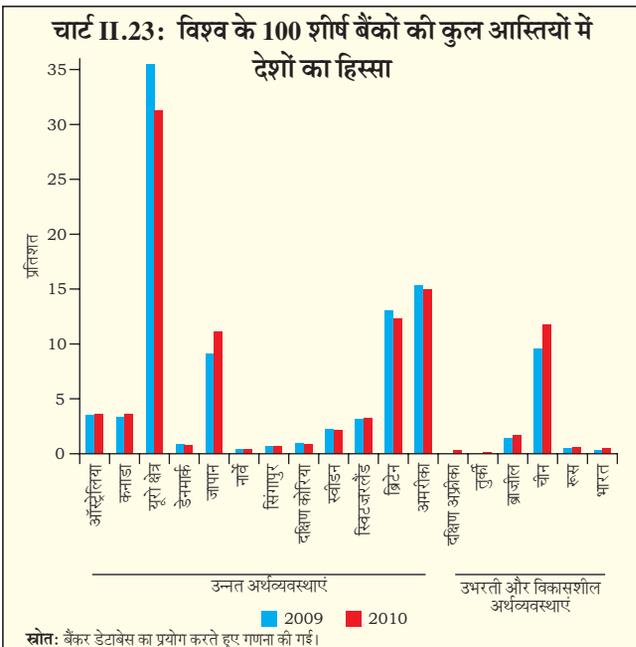
वैश्विक बैंकों के डिलीवरेजिंग की धीमी प्रक्रिया

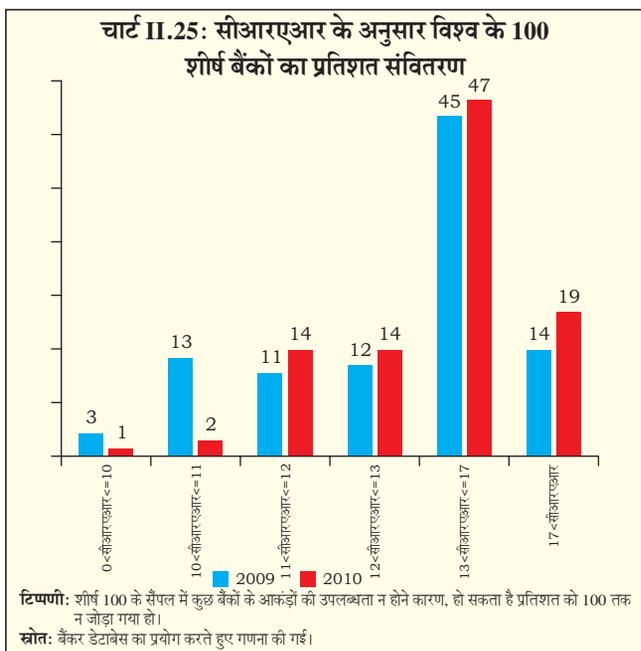
2.30 सीआरएआर में सुधार के बावजूद वैश्विक बैंकों की सुदृढ़ता, डिलीवरेजिंग की धीमी प्रक्रिया और एनपीए के बढ़ते स्तर के कारण, एक चिंता बनी रही। 2009 के अंत में 100 शीर्ष वैश्विक बैंकों के लगभग 24 प्रतिशत बैंक काफी अधिक लीवरेज्ड थे जिनका पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर), जो वित्तीय लीवरेज

की एक माप है, चार प्रतिशत से कम रहा; 2010 के अंत में यह प्रतिशत मामूली रूप से अर्थात् 5 प्रतिशत अंक घटकर 19 प्रतिशत हो गया (चार्ट II.26)। इसके विपरीत, 4 और 6 प्रतिशत के बीच सीआरएआर दायरे वाले वैश्विक बैंकों का प्रतिशत ठीक उसी परिमाण में बढ़कर 41 प्रतिशत से 46 प्रतिशत हो गया।

वैश्विक बैंकों की कमजोर होती आस्ति गुणवत्ता

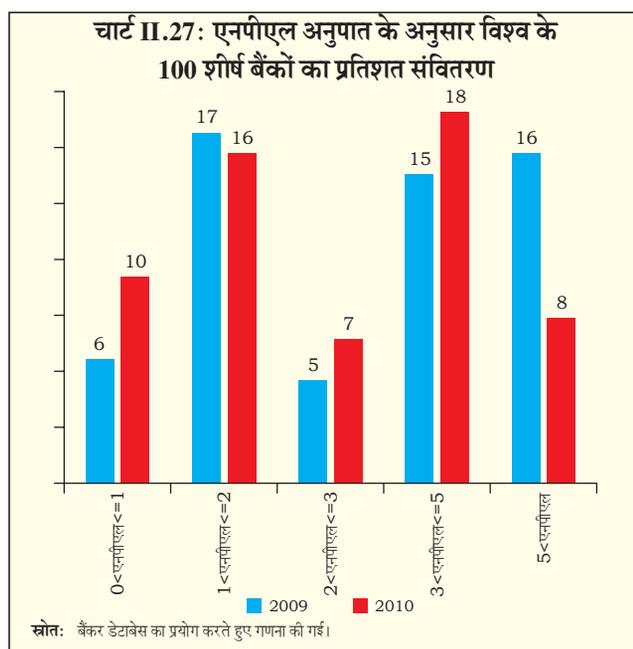
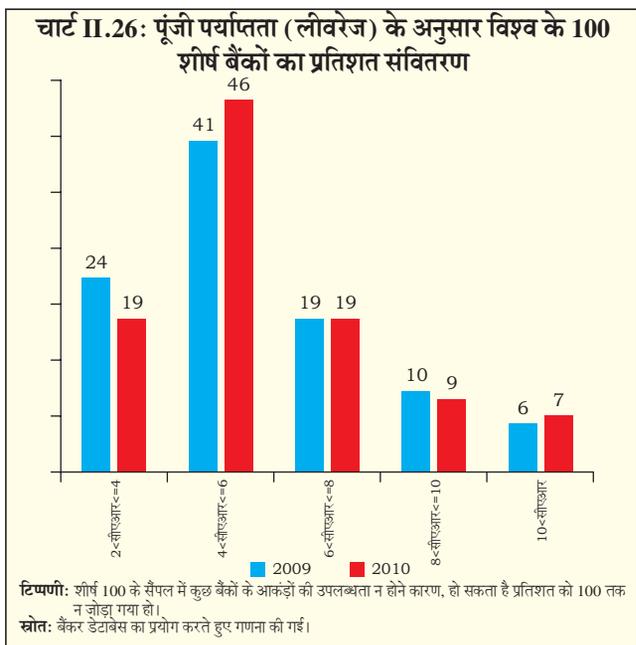
2.31 2009 और 2010 के बीच बहुत अधिक एनपीएल अनुपात रिपोर्ट करने वाले बैंकों के हिस्से में कमी आई, जिससे पता चलता है कि





बैंकों ने गंभीर ऋण तनाव की स्थिति में कुछ संयम दिखाया। चरम स्थिति के इस परिवर्तन को छोड़कर, विश्व के शीर्ष बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सामान्य कमजोरी रही (चार्ट II.27)।

2.32 सीआरएआर, लीवरेज और एनपीएल अनुपात के तीन संकेतकों को लेते हुए 20 शीर्ष वैश्विक बैंकों के स्कैटर प्लॉट से पता



चलता है कि जबकि बैंक 2009 और 2010 के बीच अपने सीआरएआर को बढ़ाने की प्रक्रिया में थे इस अवधि के दौरान बैंकों के लीवरेज और एनपीएल अनुपात में थोड़ा सुधार आया लगता है (चार्ट II.28)।

5. वैश्विक नीति सुधार

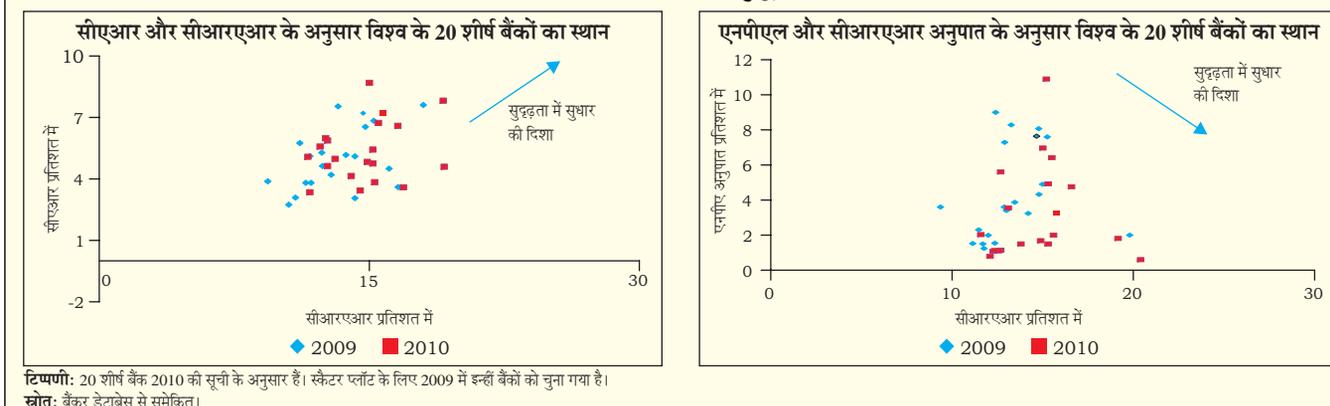
विनियामी सुधारों में काफी अधिक वृद्धि

2.33 अमरीका के नवीनतम वित्तीय संकट जांच आयोग (2011) सहित संकट पर अब तक विभिन्न आधिकारिक रिपोर्टों ने इतने विशाल परिमाण और प्रभाव वाले वित्तीय संकट के स्फोट के लिए वित्तीय विनियामी और पर्यवेक्षी⁶ ढांचे में गंभीर त्रुटियों को उत्तरदायी माना है। इसके अलावा, वित्त के वैश्वीकरण के कारण इन रिपोर्टों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अंतर विनियामक समन्वय को बढ़ाने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है। तब से बैंकिंग नीति संबंधी कई सुधारों पर विचार किया जा रहा है; इनमें से कुछ कार्यान्वयन के स्तर तक भी पहुंच गये हैं।

⁵ कई बैंकों द्वारा आंकड़े रिपोर्ट नहीं किये जाने के कारण एनपीए का वर्तमान विश्लेषण 100 बैंकों के स्थान पर केवल 59 बैंकों के सैपल पर आधारित है।

⁶ उदाहरण के लिए, देखें *टर्नर समीक्षा (2009)* और *लारोसियरे रिपोर्ट (2009)*।

चार्ट II.28: विश्व के 20 शीर्ष बैंकों के सुदृढ़ता संकेतकों में परिवर्तन



पूंजी और चलनिधि मानकों में सुधार

2.34 वर्ष के दौरान सबसे अधिक महत्वपूर्ण गतिविधि दिसंबर 2010 में बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति की पूंजी और चलनिधि मानकों को मजबूत करने के लिए सुधार ढांचा संबंधी घोषणा थी (जून 2010 में द्विपक्षीय व्यापार में काउंटरपार्टी ऋण जोखिम के लिए पूंजी संव्यवहार से संबंधित अल्प संशोधनों के पश्चात)। इस ढांचे में सितंबर 2010 में गवर्नर और पर्यवेक्षण के मुख्य अधिकारियों द्वारा सहमत तथा नवंबर 2010 में जी20 के नेताओं द्वारा अनुसंशित विनियामक मानकों के ब्यौरे दिये गये हैं। इस ढांचे में विनियमन और पर्यवेक्षण के लिए व्यक्ति-विवेकपूर्ण और समष्टि - विवेकपूर्ण दृष्टिकोणों को अपनाया गया है। दृष्टिकोण में यह बासेल II⁷ की तुलना में ज्यादा व्यापक और प्रतिचक्रिय है। इसमें सामूहिक न्यूनतम अपेक्षाओं का एक सेट दिया गया है और इसे समग्रता में कार्यान्वित किया जाना है न कि टुकड़ों में। बासेल III ढांचे में सुझाए गए सुधार उपायों के प्रमुख उद्देश्य और विशेषताएं बॉक्स II.2 में संक्षेप में दी गई हैं।

2.35 दिसंबर 2010 के पूंजी नियमों के अलावा, बीसीबीएस ने विनियामी पूंजी की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एक उपाय के रूप में जनवरी 2011 में गैर-लाभप्रदता की स्थिति में पूंजी लिखतों द्वारा

हानियों के अवशोषण की भी सिफारिश की। सिफारिश के अनुसार जब कोई बैंक निजी बाजार में अपनी सहायता करने में अपने को असमर्थ पाता है और ऐसी स्थिति में जब बैंक को बचाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा पुनर्पूँजीकरण की आवश्यकता होती है तब ऐसी दशा में सभी विनियामी पूंजी लिखतें हानियों का अवशोषण कर सकेंगी।

2.36 दिसंबर 2010 में, वित्तीय स्थिरता बोर्ड और बीसीबीएस द्वारा बनाये गये समष्टि आर्थिक मूल्यांकन समूह की अंतिम रिपोर्ट में निष्कर्ष दिया गया कि आर्थिक वृद्धि पर उच्चतर पूंजी मानकों का प्रभाव कम होगा और यह परिमाण में भी काफी कम होगा तथा इसकी समयावधि अगस्त 2010 में समष्टि आर्थिक मूल्यांकन समूह द्वारा अनुमानित समयावधि की तुलना में अधिक होगी। राष्ट्रीय अनुमानों के माध्य को लेते हुए, समष्टि आर्थिक मूल्यांकन समूह ने मानकों के कार्यान्वयन की शुरुआत से 35 तिमाहियों में वार्षिक जीडीपी वृद्धि दर में इसके आधारभूत स्तर से लगभग 3 आधार अंकों की गिरावट पाई। दीर्घकालिक आर्थिक प्रभाव समूह ने लंबे समय तक नये मानकों के लागत और लाभों के बारे में अध्ययन किया। दीर्घकालिक आर्थिक प्रभाव समूह ने पाया कि जबकि त्यागी गई स्थायी जीडीपी की लागत के थोड़ी होने की आशा है, वहीं संकट से संबंधित जोखिम कम करने के लाभ काफी अधिक⁹ होंगे।

⁷ पूंजी अपेक्षाओं के बासेल III और बासेल II मानदंडों की तुलना तथा बासेल III की चरणबद्ध व्यवस्था हेतु अनुसूची के लिए 2008-09 की भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति और प्रगति संबंधी रिपोर्ट देखें।

⁸ देखें “रेगुलेटरी रिफॉर्म : रिमेनिंग चैलेंजेस” पर श्री जैम करुआना का भाषण बीआइएस, जुलाई 2011।

⁹ “एन एसेसमेंट ऑफ दि लांग टर्म इकोनॉमिक इम्पैक्ट ऑफ स्ट्रॉंगर कैपिटल एंड लिक्विडिटी रिक्वायरमेंट्स” बीआइएस, अगस्त 2010।

बॉक्स II.2: बासेल III ढांचे के प्रमुख उद्देश्य और विशेषताएं

पूँजी मानक

I. पूँजी आधार बढ़ाना

उद्देश्य - विभिन्न क्षेत्राधिकारों से संबंधित परिभाषाओं में गुणवत्ता, सुसंगतता और पूँजी आधार के प्रकटन में पारदर्शिता सुनिश्चित करना।

मानदंड - I.1 टियर I पूँजी को मुख्य रूप से सामान्य शेयरों और प्रतिधारित अर्जनों के रूप में रखा गया है; I.2 टियर I पूँजी के शेष में ऐसी गौण लिखतें शामिल हैं जिसमें पूर्ण रूप से विवेकसम्मत असंचयी लाभांश हैं और जिसमें कोई परिपक्वता तिथि अथवा शोधन के लिए प्रोत्साहन नहीं है; I.3 ऐसी नवीन हाइब्रिड लिखतों को समाप्त किया जाएगा जिनके साथ शोधन के लिए प्रोत्साहन हैं।

II. जोखिम कवरेज को बढ़ाना

उद्देश्य - विशेष रूप से तुलन पत्र और तुलनपत्रेतर मदों तथा डेरिवेटिव एक्सपोजर के लिए पूँजी ढांचे के जोखिम कवरेज को मजबूत करना।

मानदंड - II.1 तनावग्रस्त मूल्य जोखिम (वीएआर) पूँजी अपेक्षा की शुरुआत करना जो काफी अधिक वित्तीय तनाव की निरंतर 12 महीने की अवधि पर आधारित हो; II.2 बैंकिंग और ट्रेडिंग बुक में पुनर्प्रतिभूतिकरण के लिए उच्चतर पूँजी अपेक्षा; II.3 काउंटरपार्टी की ऋण पात्रता में गिरावट से संबद्ध, ऋण मूल्यन समायोजन जोखिमों की संभावित बाजार मूल्य हानियों के लिए, पूँजी प्रभार की शुरुआत करना; II.4 संपार्श्वीकृत प्रबंधन के लिए मानकों को मजबूत करना। काउंटरपार्टी के प्रति गैर-तरल डेरिवेटिव स्थिति वाले बड़े बैंकों को, विनियामी पूँजी अपेक्षाओं को निर्धारित करने के लिए लंबी मार्जिन अवधि हेतु आवेदन करना होगा।

III. लीवरेज मानदंड के साथ जोखिम आधारित पूँजी अपेक्षाओं को संपूरित करना

उद्देश्य - बैंकिंग क्षेत्र में लीवरेज को रोकना जिससे डिलीवरेजिंग से संबंधित जोखिम कम हों।

मानदंड - III.1 लीवरेज के एक साधारण, पारदर्शी और स्वतंत्र मानदंड की शुरुआत करना जो लेखांकन मानकों के अंतरों को समायोजित करके विभिन्न क्षेत्राधिकारों में तुलनीय हो।

प्रणालीगत जोखिम प्रबंधन में सुधार

1. समष्टि विवेकपूर्ण विनियामी ढांचे से संबंधित सुधार

2.37 संकट ने बताया कि अधिकांश वित्तीय कंपनियों को वैयक्तिक स्तर पर विनियमित किया जा सकता है लेकिन प्रणाली को पर्यवेक्षित करने के लिए एक व्यवस्था की कमी कुल मिलाकर वित्तीय अस्थिरता पैदा कर सकती है। संकट के समय से, प्रणाली - व्यापी जोखिमों से निपटने के लिए एक समष्टि विवेकपूर्ण ढांचा विकसित करने पर स्पष्ट रूप से फोकस रहा है।

2.38 जी-20 विनियामी सुधार संबंधी कार्य सूची में समष्टि विवेकपूर्ण विनियमन पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जिसमें एक ऐसा

IV. प्रतिचक्रीय बफर के माध्यम से चक्रीय-अनुकूलता को घटाना

उद्देश्य - बैंकिंग प्रणाली के अंतर्गत चक्रीय अनुकूलता संबंधी उतार-चढ़ावों को कम करने के लिए इसे “आघात अवशोषक” के रूप में बनाना बजाए इसको वास्तविक अर्थव्यवस्था के प्रति जोखिम के संप्रेषक बनाने के।

मानदंड - IV.1 मौजूदा उपचित हानि (आईएल) के विपरीत, सापेक्षिक रूप से कम चक्रीय अनुकूलता प्रत्याशित हानि (ईएल) की ओर प्रस्थान और प्रत्याशित हानि दृष्टिकोण के अनुरूप पर्यवेक्षी दिशानिर्देश का अपडेशन करना; IV.2 न्यूनतम पूँजी से अधिक पूँजी कंजर्वेशन बफर का निर्माण करना और अत्यधिक ऋण वृद्धि की अवधि के दौरान बफर दायरे का समायोजन करना।

चलनिधि मानक

I. न्यूनतम चलनिधि मानक

उद्देश्य - अंतरराष्ट्रीय रूप से मिले-जुले और मजबूत चलनिधि मानक लाना क्योंकि सुदृढ़ पूँजी अपेक्षाएं आवश्यक तो हो सकती हैं लेकिन बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता के लिए पर्याप्त दशाएं नहीं।

मानदंड - I.1 पिछले एक माह से जारी गंभीर तनाव के परिवेश का सामना करने के लिए चलनिधि कवरेज अनुपात की शुरुआत करना जिससे उच्च गुणवत्ता वाले तरल संसाधनों की पर्याप्तता सुनिश्चित हो; I.2 निवल स्थिर वित्तीयन अनुपात, जिसकी एक वर्ष की लंबी समय सीमा होती है, की शुरुआत करना जिससे आस्तियों और देयताओं को धारणीय परिपक्वता ढांचा प्रदान किया जा सके।

II. संख्यात्मक चलनिधि मैट्रिक्स

उद्देश्य - चलनिधि जोखिमों को रोकने के लिए पर्यवेक्षकों द्वारा प्रयुक्त संख्यात्मक मैट्रिक्स में सुसंगतता लाना।

मानदंड - II.1. मैट्रिक्स की शुरुआत करना जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ संविदागत परिपक्वता विसंगति, वित्तीयन का संकेंद्रण, प्रचलन के अनुसार उपलब्ध अप्रभारित आस्तियां और चलनिधि कवरेज अनुपात शामिल हो।

संदर्भ :

बासेल III: “ए ग्लोबल रेग्युलेटरी फ्रेमवर्क फॉर मोर रिसीलिपेंट बैंक्स एंड बैंकिंग सिस्टम्स” अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक, जून 2011।

ढांचा¹⁰ विकसित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का आवाहन किया गया है। बीसीबीएस द्वारा बनाये गये बासेल III ढांचे में चक्रीय-अनुकूलता को कम करने और वित्तीय प्रणाली की आघात-सहनीयता को बढ़ाने के लिए कई प्रावधान शामिल किये गये हैं। बासेल III ढांचे के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण समष्टि विवेकपूर्ण मानदंड प्रतिचक्रीय पूँजी बफर है जो प्रणालीगत जोखिम के समय आयाम को ध्यान में रख सकता है; इस बफर की संकल्पना और कार्यप्रणाली के ब्यौरे बॉक्स II.3 में दिये गये हैं।

2.39 बासेल III के अन्य प्रावधान ऐसे हैं जो प्रणालीगत जोखिमों के टाइम डाइमेंशन की समस्या का भी निराकरण कर सकते हैं यद्यपि वे

¹⁰ देखें “दि बासेल कमिटीज रिस्पॉस टू दी फाइनेंशियल क्राइसेस: रिपोर्ट टु दि जी-20” बीआइएस, अक्टूबर 2010।

बॉक्स II. 3 : प्रतिचक्रिय पूंजी बफर : संकल्पना और कार्यप्रणाली

बासेल III ढांचे में प्रतिचक्रिय पूंजी बफर की शुरुआत, विनियामी पूंजी की गुणवत्ता में सुधार लाने और इसकी चक्रिय - अनुकूलता पर कार्रवाई करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे बैंकिंग प्रणाली की एक बेहतर समष्टि विवेकपूर्ण निगरानी संभव हो सकेगी।

दिसंबर 2010 में बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) ने प्रतिचक्रिय पूंजी बफर को कार्यशील करने के लिए राष्ट्रीय प्राधिकारियों को दिशानिर्देश जारी किए। इन दिशा-निर्देशों के अनुसार राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार तय करेगा कि कैसे बफर जोखिम भारित आस्तियों के 0-2.5 प्रतिशत के दायरे के अंतर्गत अलग-अलग होगा और यदि प्रणालीगत जोखिम एक आकार ले लेते हैं तो उसे समयबद्ध तरीके से इस अपेक्षा को दूर करने के लिए तैयार रहना होगा। बफर को मजबूत करने के लिए सामान्य संदर्भ दिशानिर्देश, जैसाकि बीसीबीएस सिद्धांतों में कहा गया है, जीडीपी अंतराल की तुलना में निजी क्षेत्र का ऋण है (दीर्घावधि रुझान के अनुसार जीडीपी की तुलना में ऋण अनुपात का विचलन)। बीसीबीएस ने कहा है कि यह दिशानिर्देश हमेशा सभी क्षेत्राधिकारों में काम नहीं करता है, दिशानिर्देश पर यांत्रिक रूप से निर्भर रहने के बजाय समुचित संप्रेषण के साथ निर्णय लेना, बफर को मजबूत करने का एक अभिन्न हिस्सा है। बीसीबीएस ने अन्य परिवर्तनशील चरों और गुणवत्तात्मक सूचनाओं जैसे आस्ति मूल्य, निधियन स्रैड तथा ऋण चूक स्वैप स्प्रेड, ऋण दशाओं संबंधी सर्वेक्षणों तथा अन्य बातों के साथ-साथ वास्तविक जीडीपी वृद्धि को शामिल करते हुए भी सुझाव दिए हैं। ये संकेतक ऋण वृद्धि की धारणीयता और प्रणाली व्यापक जोखिम के स्तर के मूल्यांकन में उपयोगी हो सकते हैं।

बीसीबीएस दिशानिर्देश के अनुसार बफर में कोई वृद्धि 12 महीने पहले ही घोषित की जानी चाहिए जिससे बैंक प्रभावी तिथि से पूर्व अतिरिक्त पूंजी अपेक्षा का समय से पालन कर सकें। कठौतियां तत्काल प्रभाव से बंद की जाएंगी जिससे विनियामी पूंजी अपेक्षाओं के कारण तंगी ग्रस्त हो रही ऋण आपूर्ति की समस्या को कम किया जा सके। फिर भी, प्राधिकारियों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने पास सूचनाओं की समीक्षा करें और तदनुसार प्रतिचक्रिय पूंजी बफर के निर्णय संबंधी समीक्षा तिमाही अथवा और जल्दी आधार पर करें।

चूंकि बफर को बनाने का निर्णय राष्ट्रीय क्षेत्राधिकारियों द्वारा लिया जाना है, भारत में रिजर्व बैंक के अंदर एक कार्यदल बनाया गया है। भारतीय संदर्भ में बफर को मजबूत करने का प्रमुख मुद्दा संदर्भ दिशानिर्देश के विकल्प से संबंधित है। भारतीय अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं और वृद्धि सभी क्षेत्रों में समान रूप से नहीं हुई है। परिणाम के रूप में, सेक्टरल ऋण अपेक्षाएं काफी अधिक अलग-अलग हो सकती हैं जिससे केवल ऋण/जीडीपी दिशानिर्देश पर आधारित जोखिम निर्माण का मूल्यांकन एक कठिन कार्य होता जा रहा है। समूह वर्तमान में इसकी और प्रतिचक्रिय पूंजी बफर के कार्यशील होने संबंधी विभिन्न मुद्दों की जांच कर रहा है।

संदर्भ :

अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (2010), “गाइडेंस टु नेशनल आथारिटीज फॉर ऑपरेटिंग दि काउंटर - साइक्लीकल कैपिटल बफर”, दिसंबर।

इस समस्या के पूरी तरह निराकरण के लिए नहीं बनाये गये हैं। इसमें स्थायी पूंजी कनवर्जन बफर; न्यूनतम लीवरेज अनुपात; और नये चलनिधि मानक शामिल हैं। जहां तक प्रणालीगत जोखिमों के क्रॉस सेक्शनल डाइमेंशन से निपटने की बात है, बढ़ी हुई बैंक पूंजी और चलनिधि के साथ बासेल III से अपेक्षा है कि वह प्रतिकूल आघातों का सामना करने के लिए प्रत्येक संस्था की आघात सहनीयता बढ़ाए।

2. प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं से संबंधित सुधार

2.40 प्रणालीगत जोखिमों को रोकने से संबंधित वर्ष के दौरान की एक प्रमुख गतिविधि जून 2011 को परामर्शकारी दस्तावेज पर गवर्नर और पर्यवेक्षण के मुख्य अधिकारी द्वारा की गई सहमति है, इस दस्तावेज में प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वैश्विक बैंकों के लिए विनियामी उपाय दिये गये हैं। अंतर्संबद्ध और संक्रमण जोखिम को कम करके, प्रणालीगत जोखिम के क्रॉस सेक्शनल डाइमेंशन की समस्या से निपटने में प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वैश्विक बैंकों का विनियमन

सहायक हो रहा है। इन उपायों में प्रणालीगत महत्ता के मूल्यांकन की कार्य-प्रणाली और अतिरिक्त अपेक्षित पूंजी तथा उनकी चरणबद्ध-व्यवस्था शामिल है। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वैश्विक बैंकों की मूल्यांकन प्रणाली संकेतक आधारित है और इसके पांच प्रमुख वर्ग हैं अर्थात् उनका आकार, अंतर्संबद्धता, उनके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के स्थानापन्न का अभाव, वैश्विक (विभिन्न क्षेत्रों में) गतिविधि और जटिलता¹¹।

3. शैडो बैंकिंग के विनियमन के लिए सुधार और विनियामी परिधि को बढ़ाना

2.41 चूंकि प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं के विनियमन, पर्यवेक्षण और प्रस्ताव के ढांचे को मजबूत बनाया गया है, इस बात की संभावना है कि शैडो बैंकिंग प्रणाली की ओर अंतरण के लिए कारोबारों के प्रोत्साहन में वृद्धि की जाए। शैडो बैंकिंग को “नियमित बैंकिंग प्रणाली के बाहर कंपनियों और गतिविधियों में ऋण मध्यस्थ” के रूप में वर्णित किया जाता है। यह खंड चिंता का विषय है

¹¹ देखें “ग्लोबल सिस्टमेटिकली इंपोर्टेंट बैंक्स; एसेसमेंट मैथडोलॉजी एंड एडीशनल लॉश एब्जॉर्बेंसी रिक्वायरमेंट” परामर्शकारी दस्तावेज, बीआइएस, जुलाई 2011।

¹² देखें “शैडो बैंकिंग : स्कोपिंग दि इसूज” एफएसबी, अप्रैल 2011।

क्योंकि इस खंड में वित्तीय मध्यस्थता एक ऐसे वातावरण में की जाती है जहां पर विवेकपूर्ण विनियामी / पर्यवेक्षी निगरानी या तो नहीं की जाती है या इसी तरह की गतिविधियों में लगे बैंकों की तुलना में कम की जाती है। विनियामी अंतराल को भरने के प्रयास में वित्तीय स्थिरता बोर्ड ने एक कार्यबल बनाया है, जिसने “शैडो बैंकिंग: मुद्दों की संभावना” शीर्षक वाला एक संभावना पत्र प्रारूप तैयार किया है जिसके आधार पर इसने ऑटम 2011 में जी-20 के विचारार्थ सिफारिशों की हैं। जी-20 ने अक्टूबर 2011 की अपनी बैठक में शैडो बैंकिंग की निगरानी संबंधी आरंभिक सिफारिशों पर सहमति जताई है। वित्तीय स्थिरता बोर्ड ने निम्न के माध्यम से शैडो बैंकिंग प्रणाली की निगरानी का सुझाव दिया है (i) *व्यष्टि* और *समष्टि* परिप्रेक्ष्य से दो चरणों में बेहतर निगरानी करना और (ii) शैडो बैंकिंग कंपनियों का *प्रत्यक्ष* विनियमन तथा इन संस्थाओं के साथ बैंकों के संव्यवहारों को नियंत्रित करने वाला *अप्रत्यक्ष* विनियमन।

2.42 इन वैश्विक सुधारों के अलावा, संकट के पश्चात की अवधि में काफी अधिक नीतिगत सुधार किए गए हैं। अमरीका, ब्रिटेन और यूरोपियन संघ में कालेजियल व्यवस्था को संस्थागत रूप देने का प्रयास किया गया है जिसमें सरकारों, केंद्रीय बैंकों और अन्य विनियामकों को शामिल किया गया है जिनकी प्राथमिक जिम्मेदारी प्रणालीगत जोखिम की पहचान करना, निगरानी करना और इनसे संबंधित खतरों से निपटना है।

6. निष्कर्ष

वैश्विक बैंक बहुत से जोखिमों का सामना कर रहे हैं

2.43 आज वैश्विक बैंकिंग प्रणाली उस मुकाम पर खड़ी है जहां पर डाउनसाइड जोखिम और चुनौतियां, बैंकिंग प्रणाली द्वारा वित्तीय संकट की शुरुआत से वृद्धि को पुनः पाने के लिए किए जा रहे सकारात्मक उपायों पर भारी पड़ रही हैं। डाउनसाइड जोखिम कई प्रकार के हैं और वे न केवल बैंकिंग प्रणाली से बल्कि सामान्य रूप से वित्तीय प्रणाली, वित्तीय दशा और वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति से भी उद्भूत हुए हैं। अन्य खंडों से उद्भूत जोखिम ‘प्रतिकूल फीडबैक’ प्रभाव के माध्यम से बैंकिंग खंड को प्रभावित करते हैं, यह शब्द यूरोपियन सेंट्रल बैंक में प्रयोग किया जाता है।

पूंजी पर्याप्तता में मामूली सुधार और वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की लाभप्रदता

2.44 जैसी कि चर्चा की गयी है, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की वृद्धि और सुदृढ़ता 2008 से दो प्रमुख मामलों में थोड़ी-सी सुधरी है। एक, 2010 में अमरीका और ब्रिटेन के बैंकों की लाभप्रदता में थोड़े सुधार के संकेत हैं। दो, वैश्विक बैंकों द्वारा पूंजी आधार को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं जिससे वे अपनी भावी हानियों को और प्रभावी तरीके से अवशोषित करने के लिए तैयार हो सकते हैं।

दुर्बलता बरकरार है

2.45 संकट के पश्चात वैश्विक बैंकिंग प्रणाली कई मामलों में कमजोर बनी हुई है। एक, कुल मिलाकर प्रणाली और अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाएं, विशेष रूप से यूरो क्षेत्र की राजकोषीय रूप से समस्याग्रस्त अर्थव्यवस्थाएं, अभी बहुत कमजोर ऋण वृद्धि दर्शा रही हैं। कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के उन क्षेत्रों में ऋण वृद्धि की पुनर्वापसी संबंधी चिंताएं बनी हुई हैं जो बैंक वित्तपोषण पर बहुत अधिक निर्भर हैं तथा जो रोजगार और वृद्धि अर्थात् लघु और मझौले उद्यमों में पुनर्वापसी के लिए महत्वपूर्ण हैं।

2.46 दो, 2010 के प्रारंभ से सरकारी ऋण दबावों की शुरुआत ने यूरो क्षेत्र की सरकारी ऋण संबंधी समस्या से ग्रस्त अर्थव्यवस्थाओं तथा जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन की परिधीय अर्थव्यवस्थाओं में ऋण, बाजार और वित्तीयन जोखिम के पुनः आने की संभावना को जन्म दिया है, इन देशों के बैंक या तो प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इन देशों के सरकारी ऋणों के प्रति एक्सपोज्ड हैं। वर्तमान समय में यूरो क्षेत्र में बैंकों का पुनर्पूँजीकरण भी एक बड़ी चिंता है। उच्च ग्रीक हेयरकट की दशा में पूंजी की कमी को देखते हुए यूरो क्षेत्र के बैंकों को पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता हो सकती है।

2.47 तीन, डिलीवरेजिंग के प्रयासों के बावजूद अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से यूरो क्षेत्र और ब्रिटेन के वैश्विक बैंक बहुत अधिक लीवरेज्ड बने हुए हैं और वे थोक वित्तीयन बाजार पर आश्रित हैं। चार, ऋण जोखिम भी उच्च स्तर पर बने हुए हैं, इसके लिए न केवल सरकार के ऋण संबंधी जोखिम उत्तरदायी हैं बल्कि कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंक ऋण का बेजमानती हिस्सा भी जोखिम

के लिए जिम्मेदार है। पांच, संकट ने अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय समावेशन के विस्तार को धीमा किया है, जिससे आपूर्ति और मांग दोनों कारकों के कारण लोग वित्तीय प्रणाली की सीमा से बाहर जा रहे हैं। बैंकों के फेल होने से उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग सुविधाओं की आपूर्ति में कमी आई है और बैंकिंग गतिविधियों में गिरावट हुई है। मांग ने बैंकिंग सेवाओं को भी प्रभावित किया है जिससे इन अर्थव्यवस्थाओं में रोजगार और आय सृजन में कमी आई है।

2.48 अंत में, उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणालियों के कार्यानिष्पादन के बीच भिन्नता बढ़ रही है। जबकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों की वृद्धि और सुदृढ़ता का स्तर कम है, प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में ऋण वृद्धि उच्च रही है जिससे इन अर्थव्यवस्थाओं में ओवरहीटिंग की समस्या पैदा हो रही है। चीन में उच्च ऋण वृद्धि की समस्या है जिससे बैंकों में हानिग्रस्त आस्तियां बढ़ रही हैं। इन अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ते अल्पावधि पूंजी प्रवाह के साथ मुद्रास्फीति के उच्च स्तर ने वित्तीय स्थिरता की चिंताओं को बढ़ाया है।

वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के लिए निकट - भावी संभावना कई अनिश्चितताओं से भरी हुई है

2.49 यह देखते हुए कि वैश्विक जोखिमों ने सुधारों को पीछे छोड़ दिया है, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के लिए तुरंत आवश्यक हो गया है कि वे समष्टि आर्थिक कार्रवाई तेज करें विशेष रूप से राजकोषीय स्थिति

में सुधार के लिए। इसके अलावा, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली को मजबूत करने और पुनरुज्जीवित करने के लिए उन्नत और उभरती दोनों अर्थव्यवस्थाओं को वैयक्तिक रूप से और सामूहिक रूप से कार्य करने की आवश्यकता है। अपनी समष्टि विवेकपूर्ण निगरानी को मजबूत करने के पश्चात इन देशों को ऐसे बैंकिंग संबंधी विनियामी सुधारों को निरंतर कार्यान्वित करने के प्रति और अधिक प्रतिबद्धता दिखानी होगी जिन पर पहले से ही सहमति हो चुकी है। इस प्रणाली में हो रहे परिवर्तनों की सही-सही पैमाइश की आवश्यकता है जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर होने वाले कोई किसी प्रतिकूल प्रभाव से बचा जा सके, विशेष रूप से उस समय से जब से वैश्विक आर्थिक बहाली कमजोर बनी हुई है। यूरो मसले को अंतिम रूप देने के लिए यूरोपियन देशों के बीच हाल के गंभीर औपचारिक विचार-विमर्श का यूरोप के बैंकों पर काफी अधिक प्रभाव पड़ेगा जिसके अनुसार उनको कठोर हेयरकट को स्वीकार करना है और पुनर्पूजीकरण के माध्यम से बैंकों के पूंजी आधार को मजबूत करना है। इस प्रकार, यूरोप के बैंकों को परिणामतः स्थिर होने के पहले कुछ ऐसे कठिन अभ्यासों को करना होगा। कुल मिलाकर, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की निकट-भावी संभावना कई अनिश्चितताओं से भरी हुई है, उनमें से कुछ इसके सीधे नियंत्रण से बाहर हैं। वर्तमान स्थिति में सरकारी एजेंसियों, केन्द्रीय बैंकों और बैंकिंग संस्थाओं को एक साथ मिलकर स्थायी रिकवरी और स्थिरता के लिए जोखिम भरे मार्ग पर चलना होगा।